ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

नवंबर, 2021

- दीये बिक गए
- नेहरू और बच्चे
- बाल दिवस
- भारत की बेटी
- त्योहार से सीखें

सहयोग राशि
₹ 20/ मात्र

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

नवंबर 2021

वर्ष : 1, अंक : 11

इस अंक की रचनाएं

स्पेशल स्टोरीज

बाल दिवस 7

त्योहार से सीखें : मोनिका अग्रवाल 10

बच्चों के चाचा नेहरू 14

तीन मूर्ति भवन 16

भारत की बेटी : इंदिरा 28

इंदिरा गांधी स्मृति 30

हरियाली का सागर और 'मालपे बीच' : गिरिजा कुलश्रेष्ठ 36

न्यूक्लियर फैमिली का समर्थक है उल्लू 52

अन्य

खेल : बैडमिंटन 60

चित्रकथा : रॉकेट 61

तीन सवाल : एक जवाब 62

संस्मरण : पर उपदेश कुशल बहुतेरे 63

बाल मंच

चित्र : आकांक्षा शर्मा, प्रत्यक्ष, आरना गौरव, चार्वी तातेड़ जैन, इधान क्वात्रा, मानवी शर्मा, प्रिशा चौखड़ा, श्रेयान्वी सिंह, , अवनि जैन, शिवांश मनुजा 59

लेख :पानी की समस्या : राज श्रीवास्तव 58

कहानियां

डॉ. देशबन्धु शाहजहांपुरी : दीये बिक गए 8

गिरीश पंकज : हैप्पी दिवाली 12

प्रकाश मनु : वे साढ़े पांच आने 18

हेमंत यादव : मुफ्त के पटाखे 22

सुधा भार्गव : अनोखे दीपक 26

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला' : आकर्षक खिलौने 32

डॉ. विमला भंडारी : मिल गई दिशा 34

सरिता गुप्ता : नन्हे दोस्त 40

मधु गोयल : दिवाली गिफ्ट 43

डॉ. के. रानी : तीनी की उलझन 44

रंजना माथुर : हमारे अंदर के भगवान 46

रेखा भारती मिश्रा : मोबाइल की लत 48

पूनम पाण्डे : वीर का संकल्प 50

कविताएं

गौरीशंकर वैश्य विनम्र : आयी दिवाली 5

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' : चम-चम करती आई दिवाली 21

नलिन खोईवाल : हम बन जाएँ चाचा नेहरु 24

डॉ. विनोद 'प्रसून' : बाल दिवस 25

महेंद्र कुमार वर्मा : गुलजार दिवाली 33

अरुण गिजरे : घड़ी 39

मेराज रज़ा : सो गया घोड़ा खड़े-खड़े 42

उदय मेघवाल 'उदय' : : मच्छर जी 49

बच्चों का अपना महीना

नवंबर का महीना कुछ खास होता है। बच्चों के लिए तो जैसे यह उनका अपना महीना होता है अधिकतर दिवाली की धूमधाम इसी महीने में होती है।

फिर उनका अपना दिन बाल दिवस भी पूरे विश्व में आमतौर पर इसी दिन मनाया जाता है। अब भारत के बच्चों के लिए तो 14 नवंबर का दिन तो है ही। कम से कम 1 दिन तो ऐसा है जिससे बच्चे कह सकते हैं कि यह हमारा दिन है। इस दिन के लिए स्कूलों में कार्यक्रम आयोजित होते हैं और बच्चों को पहली बार लगता है कि लोग उनका खासतौर पर ध्यान रख रहे हैं।

पर मुझे लगता है कि बाल दिवस एक दिन करना, बच्चों के लिए अन्याय है। सच तो यह है कि दुनिया में हर दिवस बाल दिवस होना चाहिए क्योंकि इस दुनिया को चलाने के लिए जिनकी जरूरत होती है, वे हैं बच्चे। सब लोग कभी व कभी बच्चे ही थे। बच्चों की अच्छे से परवरिश की जाए, तो वे बड़े होकर अच्छे नागरिक बनते हैं और अच्छे से देश की सेवा करते हैं। अगर यह मौका उन्हें ना मिले, तो बच्चे भटक जाते हैं और फिर जन्म लेता है आतंकवाद और हिंसा। आतंकवाद को मिटाना आसान नहीं। जब तक हम भविष्य के नागरिकों को उच्च शिक्षा देकर उनके संस्कार ने न बदलेंगे, तब तक आतंकवादी संगठनों को अपने लिए गुलाम मिलते रहेंगे जो उनके इशारों पर पूरी दुनिया को तबाह करने का प्रयास करते रहेंगे।

शायद इसलिए नेहरु जी ने कहा था कि बच्चे तो बगिया के फूल हैं, हम उन फूलों की जितने अच्छे तरीके से देखभाल करेंगे, उतना ही वे खिलेंगे और दुनिया को महकाएंगे।

इस बाल दिवस पर एक बात और मुझे याद आ रही है। पता नहीं क्यों लोग बच्चों की बात तो करते हैं लेकिन बच्चों के फायदे की चीज उन्हें अच्छी नहीं लगती। कम से कम भारत में ऐसा कह सकते हैं। यहां बच्चों के लिए दी गई तरह-तरह की सुविधाएं धीरे-धीरे खत्म की जा रही हैं और बच्चों को ही इससे परेशानी उठानी पड़ती हैं। मेरा तो मानना है कि अगर हम कहते हैं कि बच्चे किसी देश के भविष्य हैं, तो उस भविष्य को जितनी सुविधाएं हम दे सकें, देनी चाहिए ताकि वे निश्चिंत होकर खिल सकें और बेहतर नागरिक बन सकें।

यह महीना जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के जन्मदिन के लिए भी याद किया जाता है। जहां नेहरु जी ने भारत को एक नई दिशा दी, वहीं इंदिरा गांधी ने बताया कि भारत की महिलाएं घर में बैठने के लिए पैदा नहीं हुई हैं। वे चाहें तो आसमान छू सकती हैं। इसलिए, बच्चो, तुम अपने पुराने नेताओं की जीवनी अवश्य पढ़ो, क्योंकि पुराने जमाने के नेता वास्तव में मेहनत करके नेता बने थे और उनके जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है।

अनिल जायसवाल

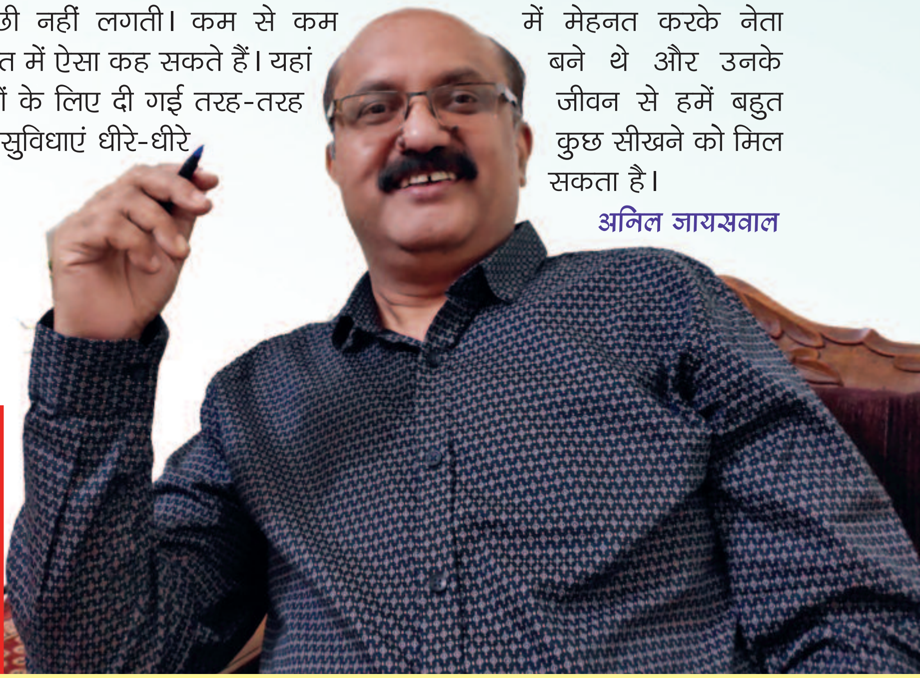

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका **पायस**

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. दीप्ति मित्तल

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609

PHONEPE : 9810556533

GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

आयी दिवाली

दीप जले, आयी दिवाली ।
जगमग हुई अमावस काली।

खील, खिलौने, गट्टा, चूरा
पूजा का सामान है पूरा

श्रीलक्ष्मी, गणेशजी बैठे
सजी हुई है सुंदर थाली।

क्या शोभा विद्युत लड़ियों की
धूम मची है फुलझड़ियों की

सबके मन उत्साह भरा है
मुख पर प्रसन्नता की लाली।

बाँटें शुभकामना-बधाई
मित्रों को दें भेंट-मिठाई

दूर करें अज्ञान अँधेरा
जीवन में छाए खुशहाली।
दीप जले, आयी दिवाली ।

अपने लेखक को जानिए: गौरीशंकर वैश्य विनम्र

तीन खंडकाव्य, छह बाल कविता की पुस्तकें प्रकाशित। देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। आकाशवाणी लखनऊ से बाल कविताओं का प्रसारण, अनेक संस्थाओं से सम्मानित, उ.प्र हिंदी संस्थान लखनऊ से सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान प्राप्त।

बाल दिवस

अनिल जायसवाल

दुनिया में सबसे जरूरी है बच्चों का ध्यान रखना। किसी भी देश का भविष्य उस देश के बच्चे के लालन-पालन पर निर्भर करता है। जितने स्वस्थ और शिक्षित बच्चे, उतना ही विकसित राष्ट्र।

इसीलिए आरंभ से ही दुनिया में बच्चों का ध्यान रखने की कोशिश की गई। पर बच्चों के लिए एक खास दिन रखने पर देश आपस में आजतक सहमत न हो सके।

सबसे पहले इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस डे 1857 में अमेरिका के मैसेजचुएट्स के डॉक्टर चार्ल्स लियोनार्ड ने मनाया। वह जून के दूसरे रविवार को चिल्ड्रेंस डे मनाते थे। पहले उसे रोज डे, फिर फ्लावर डे और अंत में चिल्ड्रेंस डे कहा गया।

रिपब्लिक ऑफ टर्की ने पहली बार बच्चों के लिए राष्ट्रीय छुट्टी घोषित की। 1920 में इस देश में 23 अप्रैल को चिल्ड्रेंस डे घोषित किया।

इसके बाद भी बहुत बार बच्चों के लिए एक खास दिन निश्चित करने का प्रयास हुआ।

सन 1954 में इंग्लैंड ने प्रयास किया कि सारे देश मिलकर किसी एक दिन को चिल्ड्रेंस डे घोषित करें। आखिर 20 नवंबर 1959 को यूनाइटेड नेशंस ने घोषणा की कि हर साल 20 नवंबर को वर्ल्ड चिल्ड्रेंस डे मनाया जाएगा। तब से हर साल 20 नवंबर को वर्ल्ड चिल्ड्रेंस डे मनाया जाता है।

इतना सब होने पर भी आज भी अधिकांश देश अपने हिसाब से अपना चिल्ड्रेंस डे मनाते हैं जैसे अपने भारत में ही यह 20 के बदले 14 नवंबर को मनाया जाता है।

भारत की जनसंख्या में करीब 50 करोड़ बच्चे 18 साल या उससे कम उम्र के हैं। इनमें से भी 23 प्रतिशत यानी करीब 12 करोड़ बच्चे 6 साल से कम उम्र के हैं, जिन्हें विशेष देखभाल की जरूरत है।

आज दुनिया में इतना तरक्की होने के बावजूद बच्चों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। गरीबी, अन्न की कमी और देश के गृहयुद्ध या युद्ध में लगे रहने का सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता है।

बच्चे जब परेशानी में पड़ते हैं, तो उनमें लड़कियों को ज्यादा भुगतना पड़ता है क्योंकि आज भी दुनिया भर में लिंग के हिसाब से भेदभाव तो होता ही है।

बच्चों की अपनी संस्था यूनीसेफ

दुनिया में बच्चों को उनके अधिकार मिले, उनकी देखभाल ठीक से हो रही है कि नहीं, इस पर नजर रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र बाल कोष अर्थात यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेंस फंड, जिसे हम यूनीसेफ के नाम से जानते हैं, की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य द्वितीय विश्व युद्ध में नष्ट हुए राष्ट्रों के बच्चों को खाना और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना था।

इसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने 11 दिसंबर 1946 को की थी। 1953 में यूनीसेफ, संयुक्त राष्ट्र का स्थाई सदस्य बन गया। उस समय इसका नाम में इंटरनेशनल शब्द को जोड़कर यूनाइटेड नेशंस इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस फंड कर दिया गया।

यूनीसेफ का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है। इसे 1965 में इसके बेहतर कार्य के लिए शांति के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। करीब 192 देशों में इस संस्था की उपस्थिति है।

दुनियाभर में बच्चों की स्थिति सुधारने के लिए यूनीसेफ वर्ष भर किसी न किसी देश में कोई न कोई कार्यक्रम चलाता रहता है।

दुनिया में बाल दिवस

11 जनवरी : ट्यूनिशिया
जनवरी का दूसरा शनिवार : थाईलैंड
13 फरवरी : म्यांमार
मार्च का पहला रविवार : न्यूजीलैंड
17 मार्च : बांग्लादेश
23 अप्रैल : टर्की
30 अप्रैल : मैक्सिको
5 मई : जापान व दक्षिण कोरिया
मई का दूसरा रविवार : यूनाइटेड किंगडम व स्पेन
17 मई : नार्वे
1 जून : करीब 50 देश जिनमें बुल्गारिया, चीन, उत्तर कोरिया, रोमानिया, वियतनाम, जर्मनी, इक्वाडोर, बेलारूस, पोलैंड और पुर्तगाल शामिल हैं
जून का दूसरा रविवार : अमेरिका
1 जुलाई : पाकिस्तान
14 सितंबर : नेपाल
12 अक्तूबर : ब्राजील
20 नवंबर : करीब 27 देश जिनमें अरब के देश, मिस्र, केन्या, फ्रांस, ग्रीस, इटली, और स्वीडन शामिल।

कहानी

दीये बिक गए

दीपक के पिताजी पुलिस विभाग में दरोगा के पद पर कार्यरत थे। उनके नाम से बड़े से बड़े बदमाश भी थर्राते थ। उनकी लंबी लंबी मूंछे और रोबदार आवाज से ही लोग डर जाते थे। वह बाहर जितने सख्त थे, घर में उतने ही नरम थे। वह दीपक की हर इच्छा पूरी करते थे। यही कारण था कि दीपक न केवल पढ़ाई में होशियार था, वरन खेलों के साथ साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भी सदैव आगे रहता था।

दीपक के पापा का ट्रांसफर इसी वर्ष इस शहर में हुआ था। इसीलिए इस शहर में उसकी यह पहली दिवाली थी। पिछले वर्ष की दिवाली बहुत सूनी रही थी। कोरोना के प्रकोप के कारण पापा को दिवाली पर भी छुट्टी नहीं मिली थी। लेकिन इस बार पापा जी ने उससे वादा किया था कि वह इस बार की दिवाली घर पर ही मनाएंगे। उनके प्रयासों और उनके अच्छे कार्यों के कारण विभाग ने इस बार दिवाली पर उनकी ड्यूटी नगर के मुख्य बाज़ार में ट्रैफिक व्यवस्था सुचारू रखने में लगा दी थी

दिवाली आने में अभी दो दिन बाकी थे। लेकिन दीपक से ये दो दिन भी मुश्किल से कट रहे थे। उसे दिवाली पर ढेर सारी आतिशबाजी करने में बहुत आनंद आता था।

चित्र : नीतू खोहवाल

दिवाली की रात को पूजन करने के बाद वह कॉलोनी के बच्चों के साथ देर तक पटाखे दगाता रहता था। इस नए शहर में भी उसने अपने विनम्र स्वभाव से कॉलोनी के सारे दोस्तों को अपना मित्र बना लिया था।

दीवाली वाले दिन सुबह ड्यूटी पर जाते समय पापा ने मम्मी से कहा था कि वह दीपक के साथ दोपहर में बाजार आ जाएं। वहां वह दीपक को पटाखे, दिवाली के दीये, खील, खिलौने तथा अन्य सामान की खरीदारी करवा देंगे। लेकिन जाते-जाते उन्होंने दीपक से वादा करवाया था कि प्रदूषण को कम करने के लिए वह केवल इको फ्रेंडली पटाखे ही खरीदेगा और ज्यादा तेज आवाज वाले बम आदि को लेने की जिद नहीं करेगा। पापा जी की इस बात को दीपक ने तुरंत मान लिया था।

दोपहर में खाना बनाने के बाद मां, दीपक के साथ बाजार की ओर चल दीं। दीवाली के त्योहार के कारण बाजार में काफी रौनक थी। गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियों की दुकानों के साथ-साथ फुटपाथ पर मिट्टी के दीयों की और मोमबत्तियों की दुकाने भी सजी हुई थीं। फुटपाथ पर दुकाने लगी होने के कारण ट्रैफिक जाम हो रहा था। इसीलिए पुलिस के सिपाही दुकानों को और पीछे करने अथवा हटाने के लिए कह रहे थे।

फुटपाथ के एक कोने में, एक बूढ़ी मां ने भी मिट्टी के दीयों की दुकान लगाई थी। साथ में उनका एक नन्हा सा बेटा भी बैठा था। दुकान लगाए काफी देर हो गई थी, लेकिन ग्राहक बूढ़ी मां की दुकान पर आ ही नहीं रहे थे। अन्य दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ और अपनी नन्ही सी दुकान पर सन्नाटा देखकर उनके चेहरे पर मायूसी छाने लगी थी।

एक पुलिस वाले ने बूढ़ी मां से दुकान को हटाने के लिए कहा। सिपाही की बात सुनकर, अभी मां कुछ कह पाती, तभी पास में बैठे बेटे ने बड़े भोले अंदाज में कहा, "हमारे दिये बिक नहीं रहे हैं। जब बिक जाएंगे, हम और मां अपने आप चले जाएंगे।"

इससे पहले कि पुलिस वाले पुलिसिया अंदाज में कुछ कहते, दीपक के पापा जी वहां आ गए। वह आगे बढ़कर बच्चे से बोले, "बेटे, क्या नाम है तुम्हारा?"

"पिंटू!", उसने बिना डरे ही धीरे से मुसकराते हुए कहा।

"मुझे भी दीवाली पर अपने घर में रोशनी करने के लिए दिये खरीदने है। लाओ, मैं तुमसे खरीद लेता हूं।" इतना कहकर उन्होंने 200 रुपए का एक नोट अपनी पर्स से निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

दरोगा जी की इस पहल से बूढ़ी मां की नन्ही सी दुकान के मिट्टी के दिये खरीदने की बाढ़ सी आ गई। सभी पुलिस वालों ने उससे दीये खरीदे। उन्होंने पब्लिक से भी मां और नन्हे बच्चे की दुकान से खरीदारी करने की अपील की।

कुछ ही देर में उसके सारे दीये बिक गए। अपनी दुकान समेटकर पिंटू, मां की उंगली पकड़कर, मुसकराते हुए वापस घर की ओर चल पड़ा। उसके चेहरे पर खुशी और उल्लास की रोशनी दरोगा जी ने बिखरा दी थी।

पुलिस का यह रूप देखकर जहां सभी दरोगा जी की प्रशंसा कर रहे थे, वहीं पास खड़े दीपक का चेहरा भी अपने पापा का नन्हे बच्चे और उसकी मां के प्रति स्नेहिल व्यवहार देखकर खुशी से दमक उठा था। ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. देशबन्धु शाहजहांपुरी : भारतीय जीवन बीमा निगम में कार्यरत। 9 बाल कहानी और 2 बाल कविता संग्रह प्रकाशित। 30 से अधिक संकलन और पाठ्य पुस्तक में रचनाएं संकलित। चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा 4 पुरस्कारों सहित अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित। 41 वर्षों से बाल साहित्य की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगभग 2000 रचनाएं प्रकाशित।

त्योहार से सीखें

माना, समय बदल रहा है, इस बदलते समय में हमें रोशनी के त्योहार का सही मतलब भी जानना चाहिए ताकि हमारा व्यक्तित्व भी निखरकर आए।

त्योहारों का सीजन शुरू हो चुका है। इस त्योहारी सीजन की हवा और भी खुशनुमा सी महसूस होने लगती है। देखा जाए, तो हर त्योहार से जुड़ा कोई न कोई इतिहास जरुर होता है। जो हमें एक अच्छी सीख देता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बदल रहा हैं, त्योहार मनाने के लोगों के तौर तरीके भी बदल रहे हैं।

अब दिवाली का ही उदाहरण ले लीजिये। दिवाली की धूम, पटाखों की आवाज और दिये की रोशनी का लोगों को बेसब्री से इंतजार होता है। लेकिन क्या तुमने सोचा है कि, यह त्योहार तुम्हें क्या सीख दे रहा है? क्या तुमने कभी पटाखों की आवाज को छोड़कर अपने माता-पिता से इस रोशनी के त्योहार यानी की दिवाली का सही मतलब पूछा है। दिवाली पर कुछ ऐसा करो कि सब खुश हो जाएं।

हाथ बंटाना

इन दिनों बहुत काम होता है। अपने माता-पिता से घर का काम समय से निपटाना सीख सकते हो। आप घर के कामों को करने में उनकी मदद करें। दिन में एक न एक काम करने के लिए शपथ लें।

दया की सीख

त्योहार मनाने का खास उद्देश्य खुशी मनाने से होता है। सबके साथ दया भाव रखें और खुशी का त्योहार सबसे मिल-बांटकर मनाएं। संभव हो, तो माता-पिता के साथ अनाथ आश्रम और वृद्धा आश्रम जाएं। दिवाली सिखाती है अपनी खुशी दूसरों के साथ बांटना। दूसरों के साथ खुशी बांटने से खुशी बढ़ती है।

अच्छाई की सीख

बुराई पर अच्छाई की जीत के साथ भगवान राम अयोध्या वापस लौटे थे। बुरे पर अच्छे के प्रतीक व अहमियत को समझ सकते हो इस त्योहार से।

अपने लेखक को जानिए

मोनिका अग्रवाल : शिक्षा : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। सम्प्रति : 'अनुगूंज' कहानी संग्रह; 'पतझड़ में मधुमास' कहानी संग्रह; 'किड्स स्टोरीज' बाल कहानी संग्रह; 'अम्मा कहती थी' सांझा काव्य संग्रह! पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

अनुशासन की सीख

दिवाली का त्योहार रोशनी और खुशियों का त्योहार होता है। इसमें पूजा रीति रिवाज से करना एक आदर्श जीवन की ओर इशारा करता है क्योंकि मां लक्ष्मी और गणेश भगवान एक अच्छे धन-धान्य, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहने का आशीर्वाद देते हैं। तुम्हें अपने माता-पिता से अनुशासन की सीख लेनी चाहिए।

रिश्तेदारों की पहचानें

इन दिनों मिलने के लिए नाते-रिश्तेदार आते रहते हैं। सभी परिवार वालों और रिश्तेदारों की इज्जत करें, उन्हें पहचाने जानें कि किससे क्या रिष्ता है। सबसे प्यार से बोलें।

एकता की सीख

दिवाली में भगवान राम और सीता की तरह सहनशीलता सीखें। आप जान लें कि सभी धर्म यानी हिन्दू, मुस्लिम, सिख और इसाई सभी एक हैं। और ये सभी भाईचारे के सबसे बेहतर उदाहरण हैं। दिवाली का त्योहार एक ऐसा त्योहार है जिसमें लोग अपनों से मिलते हैं। भाईचारे और एकता को प्रतीक दीपावली के त्योहार में बड़ों का आशीर्वाद और उनका सम्मान करना सीखें।

हैप्पी दिवाली

गोलू को सभी त्योहार अच्छे लगते हैं। जैसे हर बच्चे को लगते हैं। त्योहार आने पर तीन बातें होती हैं। एक, नए-नए कपडे मिलते हैं, दूसरे, तरह-तरह की मिठाइयां मिलती हैं खाने को, और तीसरी बात, जेब खर्च के लिए कुछ पैसे भी मिल जाते हैं।

अब तो दिवाली आने वाली है। इस कारण गोलू बड़ा उत्साही था। दिवाली तो और मजेदार तथा धमाकेदार त्योहार हैं। इसमें तो पटाखे भी मिलते है। जबरदस्त धूम-धड़ाका होता है। आतिशबाजी का अपना आनंद है। ये माना कि इसमें पैसे की बर्बादी भी है, हवा भी दूषित होती है, लेकिन कौन समझता है? यह सोचकर गोलू खुद पर ही मुसकराता है। कभी-कभी वह सोचा करता था कि पटाखों में बर्बाद होने वाले पैसे अगर किसी गरीब को दे दिए जाए, तो उसका सही उपयोग होगा।

गोलू ने इस बार ठान लिया कि इस दिवाली पर वह ऐसा ही करेगा, मगर कैसे? क्यों न अभी से कुछ-न-कुछ जोड़ना शुरू किया जाए? यह सोचकर गोलू ने हर महीने थोड़े-बहुत पैसे जोड़ने शुरू कर दिए। पिताजी जेब खर्च के लिए पैसे देते ही थे। गोलू उन्हें बचाने लगा।

गोलू जब स्कूल जाया करता था, तो पास ही रहने वाले लड़के रामू को वह अक्सर देखा करता था। रामू के पिता नहीं थे। घर पर मां सिलाई-कढ़ाई करके दो-चार पैसे कमा लेती थी। रामू स्कूल जाता था और

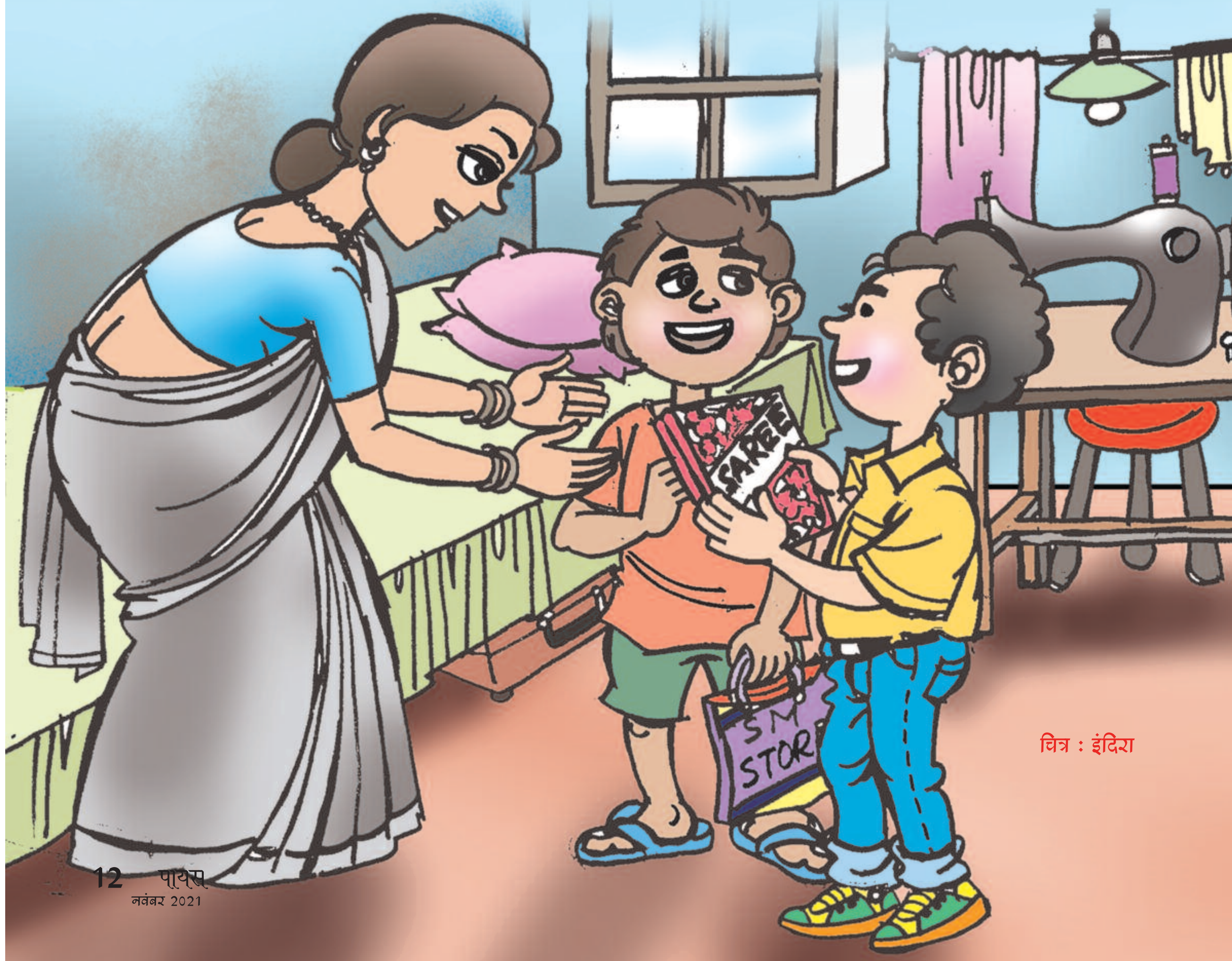

चित्र : इंदिरा

लौटकर घर के बाहर लगे बिजली के खम्भे के नीचे बैठकर पढ़ाई किया करता था। हालत ऐसी नहीं थी कि ट्यूबलाइट, पंखे लगाए जा सकें। घर में केवल एक बल्ब जलता था, जिसके सहारे उसकी मां सिलाई का काम करती थी। इसलिए रामू घर के बाहर लगे बिजली के सहारे पढ़ाई करने लगा। मां ने उसे समझाया भी पर वह नहीं माना और शाम होते ही घर के बाहर निकलकर बिजली के खम्भे के नीचे पढ़ने लगता।

रामू की यह लगन देखकर गोलू को अच्छा लगता। मगर उसे दुख होता कि रामू इतना गरीब है। काश, उसके लिए वह कुछ कर सकता। हिम्मत करे इंसान तो सब कुछ संभव है। इसलिए गोलू ने ठान लिया था कि इस बार वह रामू के घर को रोशन कर के रहेगा। रामू के घर में उजाला भर देगा। वह अपना पूरा जेब खर्च बचाएगा। पिज्जा-बर्गर, घूमना-फिरना, चाऊमीन सब बंद। न सिनेमा पर खर्च करेगा, न कोल्ड ड्रिंक पर। वह पैसे बचाएगा और दिवाली के पहले रामू को जाकर दे देगा।

गोलू ने अपनी योजना किसी को नहीं बताई। पिताजी को भी नहीं। बस, जो पैसे मिलते, उन्हें जमा करता गया। वह स्कूल जाता और लौटकर पढ़ाई में लग जाता। कभी-कभार बाहर निकलता भी, तो केवल रामू से मिलता। उसका हाल-चाल पूछता। उसके साथ ही घूमता-फिरता। उसे कभी मिठाई खिला देता, कभी चाट। कभी-कभार कुछ मिठाई रामू की मां के लिए भी बंधवा देता। रामू की मां गोलू को दुआएं देतीं। सोचतीं, आज के समय में भी ऐसे दयावान बच्चे हैं। वर्ना सब तो अपनी दुनिया में ही मगन नजर आते हैं।

गोलू के कहने पर उसकी मां अपनी साड़ियों में पीकू-फॉल करने रामू की मां के पास ही भेजतीं। गोलू अपनी कुछ किताबें भी रामू को दे चुका था।

आखिर दिवाली पास आ गई। गोलू के पिताजी बोले, "बेटे, ये रखो दो हजार रुपए, मॉल जाकर अपने लिए कोई अच्छी-सी शर्ट खरीद लेना। पैंट भी खरीदनी है तो बोलो।" इतना कहने के बाद पिताजी ने दो हजार और दे दिए। गोलू के पास चार हजार रुपए आ गए।

इतने पैसे पाकर गोलू फूला नहीं समाया। साल भर में पांच-छह हजार रुपए तो उसके पास भी जमा हो चुके थे। वह बेहद खुश हुआ। इतनी रकम से वह गोलू को पैंट-शर्ट दिला सकता है, और रामू की मां के लिए एक साड़ी भी खरीद सकता है। मिठाई भी आ जाएगी।

अगले दिन गोलू अपने लिए कपड़े खरीदने निकल पड़ा और रामू को भी ले लिया। "चल रामू, मैं अपने लिए दिवाली के लिए कपड़े खरीदने जा रहा हूं। तू भी चल मेरे साथ। हम लोग मिलकर खरीदी करेंगे।"

रामू पहले तो झिझका, मगर गोलू की जिद के आगे उसे झुकना पड़ा। गोलू अपनी कार में बिठाकर रामू को शॉपिंग मॉल ले गया। उसने अपने साथ रामू के लिए भी शर्ट-पैंट खरीद ली, रास्ते में मिठाई की दुकान से मिठाई खरीदी। मॉल से रामू की मां के लिए भी एक साड़ी खरीद ली।

फिर गोलू रामू के साथ उसके घर पहुंचा। रामू की मां को प्रणाम कर बोला, "ये सब दिवाली का गिफ्ट है मेरे परिवार की ओर से। रामू मेरा मित्र है। आप मेरी मां जैसी हैं।"

रामू की मां कुछ बोल न सकीं। उनकी आंखों में आंसू आ गए, उन्होंने गोलू को गले से लगा लिया और बोलीं, "तुम जैसे बच्चे अगर समाज में बढ़ जाएं, तो हर किसी की दिवाली जगमग हो उठे।"

रामू की मां ने गुड़ खिलाकर गोलू का मुंह मीठा कराया। गोलू ने बड़े मन से उसे ग्रहण किया। जाते-जाते उसने रामू के हाथो में एक लिफाफा भी थमा दिया। उसमे एक हजार रुपए थे। फिर रामू को गले लगाकर बोला, "हैप्पी दिवाली, दोस्त।"

गोलू आज बेहद खुश था। उसे लग रहा था, आज वह दुनिया की तमाम खुशियां बटोरकर घर लौट रहा है। घर पहुंचकर उसने माता-कुछ बता दिया। यह सुनकर दोनों खुशी से झूम उठे। मां बोलीं, "तूने तो कमाल ही कर दिया मेरे लाल।"

पिता बोले, "तुमने जो काम किया है, उसे सुनकर अब मुझे और अधिक खुशी हो रही है। मगर यह तो बताओ की तुम्हें इसकी प्रेरणा कैसे मिली?"

रामू बोला, "पिताजी, आपने मुझे एक बाल पत्रिका लाकर दी थी। उसमें मैंने इसी तरह की एक कहानी पढ़ी थी। मैंने सोचा, जब कहानी में कोई अपने मित्र की मदद कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं कर सकता? मैंने यह भी पढ़ा था कि 'बांटने से अधिक खुशी मिलती है।"

गोलू की बात सुनकर माता-पिता की आंखे भर आईं। दोनों ने गोलू को गले से लगा लिया और कहा, "हैप्पी दिवाली।" ✪

अपने लेखक को जानिए

गिरीश पंकज : गिरीश जी अनेक विधाओं में लिखते हैं। लगभग सौ पुस्तकें छप चुकी हैं। बच्चों के लिए नाटक, कहानी और कविताएं भी लिखते रहे हैं। उनके प्रकाशित बाल साहित्य की संख्या सात है।

14 नवंबर :
जन्मदिन पर विशेष

बच्चों के चाचा नेहरू

भारत में 14 नवंबर के दिन चिल्ड्रेंस डे मनाया जाता है, जिसे बाल दिवस के नाम से सब जानते हैं। 14 नवंबर को भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन होता है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू बच्चों से बहुत प्यार करते थे। उनकी अपनी भी केवल एक ही बेटी थी, इंदिरा गांधी। बहुत छोटी थी इंदिरा, जब उनकी माताजी का देहांत हो गया था। ऐसे में बेटी की सारी जिम्मेदारियां नेहरू जी पर ही आ गईं। यह भी एक कारण हो सकता है कि नेहरू जी बच्चों से बहुत जुड़े हुए थे।

नेहरू जी का बच्चों से इतना जुड़ाव था कि उन्हें बच्चे चाचा कहते थे और अब तो वह सब बच्चों के लिए चाचा नेहरू ही कहलाते हैं

नेहरू जी का मानना था कि बच्चों का बचपन बहुत कीमती होता है और हर बच्चे को उसका बचपन जीने का अधिकार होना चाहिए। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उन्हें बेहतर और उच्च शिक्षा मिले। वह बच्चों को एक उद्यान में लगे फूल की तरह मानते थे। उनका मानना था कि जिस तरह एक उद्यान में लगे फूल उद्यान की शोभा बढ़ाते हैं, उसी तरह एक देश में रहने वाले बच्चे उस देश की शोभा बढ़ाते हैं, उसका मान बढ़ाते हैं और उसका भविष्य होते हैं। इसलिए बच्चों का बहुत ध्यान से लालन-पालन करते हुए उनका विकास करना चाहिए क्योंकि वे देश के भविष्य हैं और इस देश को चलाने की जिम्मेदारी अंततः उन्हीं पर आएगी।

बच्चे ही देश की असली मजबूती होते हैं और किसी भी समाज की नींव भी, इसलिए उनकी सोच को अगर बचपन में ही अच्छे से विकसित किया जाए, तो इसका फायदा समाज, देश और दुनिया को ही होता है।

नेहरू जी का विजन स्पष्ट था। उनका मानना था कि जैसे भी हो, देश को बच्चों की शिक्षा पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए। इसलिए भारत की शिक्षा व्यवस्था को बढ़िया बनाने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किया।

नेहरू जी अक्सर अपने भाषण में बच्चों के लिए कुछ ना कुछ कहते रहते थे, जो आज उक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो गए हैं। जैसे-

आमतौर पर जब बच्चे बड़े हो रहे होते हैं, तो उनके प्राकृतिक स्वतंत्रता को अध्यापक और उनके बड़े तकरीबन छीन लेते हैं। किताबी पढ़ाई के जाल में फंसकर वह मानवता को पीछे छोड़ देते हैं। जबकि जीवन में शिक्षा के साथ-साथ अगर खेल से भरपूर जीवन बच्चों को दिया जाए तो इस देश के लिए सबसे बढ़िया रहेगा। आज के बच्चे कल के भारत का भविष्य हैं। हम जिस तरह से बच्चों को विकास करेंगे, उसी तरह से हमारा देश भी विकसित होगा।

नेहरू जी का प्रयास था भारत में उच्च शिक्षा के लिए हर अवसर उपलब्ध हो। बच्चों को इसके लिए भटकना न पड़े। बच्चों की भलाई के लिए उन्होंने अनेक योजनाएं आरम्भ कीं। इनमें से कुछ हैं।

इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी)

आने वाला समय मैनेजमेंट और टेक्नोलॉजी का होगा। यह नेहरू जी में आज से 70 साल पहले ही जान लिया था। उन्हीं के प्रयास का नतीजा था कि बच्चों को पढ़-लिखकर उच्च शिक्षा पाने के लिए भटकना नहीं पड़ा। नेहरू जी ने भारत की आजादी के बाद इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया और 1951 में देश का पहला आईआईटी (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में खुला। नेहरू जी ने 1961 तक पांच आईआईटी की स्थापना कर दी थी। उसके बाद अगले 50 वर्षों में केवल 16 आईआईटी खुल पाए। आज देश में 21 आईआईटी हैं।

बाल वीरता पुरस्कार

स्कूल में स्काउट होते हैं! 2 अक्तूबर 1957 को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक समारोह के दौरान टेंट में आग लग गई थी। उस समारोह में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। एक 14 साल के स्काउट हरीशचंद्र ने बहादुरी दिखाकर अपने चाकू से टेंट को चीरकर रास्ता बनाकर हजारों लोगों की जान बचाई थी। इस घटना के बाद नेहरू जी के सुझाव पर बच्चों के लिए राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार की शुरुआत की गई और पहला सम्मान इसी बहादुर बच्चे हरीशचंद्र को मिला। बच्चों को सम्मान देते हुए देश की राजधानी दिल्ली में होने वाले गणतंत्र दिवस परेड में पुरस्कृत बच्चों को हाथी पर बैठाकर परेड में शामिल किया जाता था।

26 जनवरी को जो बाल वीर पुरस्कार दिए जाते हैं, उसकी स्थापना भी नेहरू जी ने की थी। उनका कहना था कि यदि होनहार और वीर बालकों को पहचान कर उनका सम्मान किया जाए, तो बच्चों की बच्चों के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होगी और वे बड़े होकर अच्छे नागरिक बनेंगे।

चिल्ड्रेंस फिल्म सोसाइटी ऑफ इंडिया

CHILDREN'S FILM SOCIETY INDIA
Promoting Every Child's Right to Entertainment

भारत में 1932 से ही अच्छी-खासी संख्या में फिल्में बनने लगी थी। परंतु अधिकांश फिल्में बड़ों की ही होते थीं। कुछ फिल्में जो बच्चों के लिए बनाई जाती थी, उनके केंद्र में बच्चे तो होते थे, लेकिन कहानी गंभीर ही होती थी। नेहरू जी चाहते थे कि बच्चों के लिए विशेष तौर पर फिल्में बनाई जाएं, जिनमें विषय वस्तु से लेकर सब कुछ बच्चों के अनुरूप हो। इसे ध्यान में रखकर 11 मई 1955 को मुंबई में चिल्ड्रेंस फिल्म सोसाइटी ऑफ इंडिया की स्थापना हुई। इस संस्था ने 1956 में पहली फिल्म 'जलदीप' बनाई जिसमें माला सिन्हा ने अभिनय किया था।

तीन मूर्ति भवन

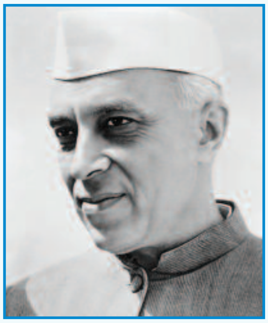

तीन मूर्ति भवन नेहरू मेमोरियल बिल्डिंग का निर्माण सन 1930 में हुआ था। इस भवन का निर्माण तत्कालीन ब्रिटिश इंडियन आर्मी के चीफ के आवास के रूप में किया गया था। यह भवन तीन मूर्ति भवन के रूप में इसलिए प्रसिद्ध हुआ क्योंकि भवन के बाहर गोल चक्कर में तीन सैनिकों की मूर्ति लगी है।

देश की आजादी के बाद इसे प्रधानमंत्री आवास बना दिया गया और अपनी मृत्यु तक जवाहरलाल नेहरू इस भवन में रहे। उनकी मृत्यु के बाद इसे उनकी याद में समर्पित कर दिया गया।

नेहरू मेमोरियल का मुख्य द्वार

मुख्य भवन के बाहर लगी तीन मूर्ति

नेहरू मेमोरियल का मुख्य भवन

नेहरू जी का शयन कक्ष

लाइब्रेरी और गलियारा

नेहरू जी का ऑफिस

परिसर में बाद में बना प्लेनेटोरियम

संग्रहालय व लाइब्रेरी की सूचना

प्रदर्शनी दीर्घा

परिसर में प्रदर्शित तोप

विदेश में मिले उपहार

वे साढ़े पांच आने

यह कहानी तो है, पर इसे आत्मकहानी भी कह सकते हैं। इसलिए कि बिल्कुल घटना है यह। मेरे समय का पुराना जमाना। उन दिनों आने, दो आने, चवन्नी और अठन्नी चलती थी, और एक रुपए में सोलह आने होते थे।

कहानी उन दिनों की है, जब मैं शायद तीसरी-चौथी क्लास में था। उन दिनों हमारा जो स्कूल था, उसमें खेलने का कोई मैदान न था। स्कूल के सामने अग्रवाल धर्मशाला थी, उसका बड़ा सा आंगन था। उसी में हम इंटरवल में कबड्डी, पंचगुट्टी और छुआछाई वगैरह खेला करते थे।

रोजाना के जेबखर्च के लिए हमें जो पैसे मिलते, कभी-कभी हम उन्हें खर्च न करके आगे के लिए बचा लिया करते थे। सोचते थे कि इन पैसों से कोई अच्छी सी चीज खरीदेंगे। वह अच्छी सी चीज कोई बड़ी सी लाल-हरी गेंद भी हो सकती थी या क्रिकेट का बल्ला भी।

अलबत्ता जिस दिन का यह किस्सा है, मैंने खूब बढ़िया टिनोपाल लगी सफेद निकर पहनी हुई थी। उस पर हलके रंग की कोई शर्ट। खूब अच्छी धूप खिली थी और ऐसे में सचमुच खेल-कूद में रंग आ जाता है। मैं भी पूरी तरह से खेल की मस्ती में था। तब मुझे याद है मेरी जेब में साढ़े पांच आने थे। दोस्तों के बीच कबड्डी शुरू हो गई, तो मैं भी खेल में लीन हो गया।

मेरे पाले के लोग एक-एक कर आउट हो चुके थे। सबकी उम्मीदें मुझ पर टिकी थीं। जोश में कबड्डी -कबड्डी करता मैं गया और एकाएक विपक्षी टीम द्वारा धर लिया गया।

'ओह मारे गए!' सोचकर मैंने झट अपना घोड़ा-पछाड़ दांव चला। यानी अपने नायाब अंदाज में कबड्डी-कबड्डी करते हुए, हाथों को बीच की लकीर तक फैलाकर एक साथ बहुतों को आउट कर दिया।

अपने लेखक को जानिए

प्रकाश मनु : सुप्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक और बच्चों के प्रिय लेखक। लगभग ढाई दशकों तक बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें। बाल कविता का इतिहास भी लिखा। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

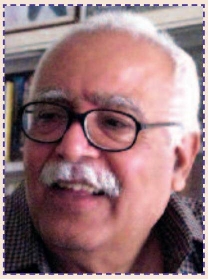

"यह हुई न बात...!" मेरे पाले के लोग चीखे।

"अरे वाह, जीत गए...!"

"जीत गए भई, जीत गए...!"

यह जीत की खुशी का क्षण था। अपूर्व उल्लास और अभिमान का क्षण। और मैं सचमुच विजय-गर्व में फूला हुआ था। दोस्त मेरी पीठ ठोंक रहे थे और मैं वाकई अपने ऊपर इतरा रहा था, "वाह रे कुक्कू, वाह...!"

पर हाय, यह क्या...? तभी मैंने अपनी जेब में हाथ डाला, तो जी धक से रह गया। मेरी जेब में तो अब एक पैसा भी नहीं था। अभी थोड़ी देर पहले पूरे साढ़े पांच आने थे, वे कहां गए? किधर चले गए?

मैंने हारे हुए जुआरी की तरह फिर से निकर की जेब में हाथ डाला। इधर देखा, उधर देखा। पर वहां कुछ होता, तो मिलता। पैसे निकर की जेब से निकल चुके थे। खजाना लुट चुका था, और मैं भौचक्का।

मित्रों ने आशंका जताई, "देखियो कुक्कू, कहीं तेरी जेब फटी हुई तो नहीं है?"

मैंने उंगलियों से फिर-फिर टटोला। हर तरह से देख लिया। जेब कहीं से फटी हुई नहीं थी। एकदम साबुत थी।

तो फिर पैसे कहां गए...? और कोई इकन्नी-दुअन्नी नहीं, पूरे साढ़े पांच आने।

तभी मेरी नजर एक कोने में खड़े दो-तीन लड़कों की ओर गई। वे मेरी ओर देखकर हंस रहे थे। मैंने उनसे पूछा, "भाई, मेरे पैसे जेब से गिर गए हैं। तुमने तो नहीं लिए?"

"हम काहे को लेंगे?...गिर गए हैं तो ढूंढ़ो!" कहकर वे बेशर्मी से हंसने लगे।

मेरी भीतर जैसे लट्टू सा जल गया हो। मुझे लगा, हो न हो, पैसे इन्होंने ही उठाए हैं।

मैं मिट्टी में पैसे ढूंढ़ रहा था और

चित्र : नीतू खोहवाल

बीच-बीच में उनसे मनुहार भी कर रहा था कि "देख लो भाई, अगर तुमने लिए हों तो दे दो।...कोई थोड़े-बहुत नहीं, पूरे साढ़े पांच आने थे। मैं कबड्डी खेलते हुए गिरा था, तभी नीचे जमीन पर गिर गए होंगे। तुमने लिए हों, तो दे दो, भाई।"

पर वे हंसते थे और कहते थे, "हमने तो नहीं लिए। गिर गए हैं तो ढूंढ़ो।"

जो बच्चे मेरे साथ खेल रहे थे, उन्होंने भी उन शरारती लड़कों से आग्रह किया कि अगर उन्होंने पैसे लिए हों तो लौटा दें।

"जब हमने लिए ही नहीं, तो लौटाएं क्या... ?" कहकर वे एक पल के लिए गंभीर हुए, फिर हंसने लगे।

इतने में इंटरवल खत्म होने की घंटी बजी। बहुत ढूंढ़ने के बाद दुखी होकर मैं क्लासरूम में चला गया और दिन भर दुखी बना रहा। उस उम्र में साढ़े पांच आने मेरे लिए बड़ी चीज थे। उनका न होना बार-बार टीसता था और मेरा रोना छूट जाता था। किसी के पैसों पर कभी निगाह न रही। पर मेरा एक पैसा भी कहीं बेकार जाता, तो हिया दुखता था।

मैंने कहा, तो किसी से कुछ नहीं। पर मन अंदर ही अंदर रो रहा था। वे पैसे सपने तक में आते थे और जी दुखी कर जाते थे। कभी लगता था, मिल गए, कभी लगता था, फिर से खो गए। कभी वे पतंग बनकर आसमान में उड़ने लगते, कभी नीचे आते और एकाएक हवा में गायब हो जाते। अजीब आफत थी।

अब हर रोज इंटरवल में मैं खेलता तो न था, पर मिट्टी में आंखें टांके बड़े ध्यान से इधर-उधर देखता था, कि शायद मेरे खोए हुए साढ़े पांच आने कहीं जमीन पर पड़े हुए मिल जाएं।

एक दिन तो इतवार को मैं सुबह नहा-धोकर और नाश्ता करके कोई आठ-नौ बजे अग्रवाल धर्मशाला में पहुंच गया, कि आज वहां कोई न होगा, तो आराम से अपने साढ़े पांच आने ढूंढूंगा। वहां जाते ही मैंने सचमुच खोज अभियान शुरू कर दिया।

मैं वहां चुपचाप इधर-उधर घूमता हुआ, दुखी और उदास-सा अपने खोए हुए पैसे ढूंढ़ रहा था। तभी एक छोटा सा लड़का वहां आया। बोला, "आपके ही पैसे गिर गए थे?"

मैंने कहा, "हां।"

"सच्ची बोल रहे हो न?"

मैंने फिर कहा, "हां...!"

"आपको मेरी दीदी बुला रही है।" कहकर उसने सामने के मकान की ओर इशारा किया।

मार्बल चिप्स का बना साफ-सुथरा और कुछ ऊंचे चबूतरे पर मकान था। तीन-चार सीढ़ियां चढ़कर ऊपर

पहुंचा जा सकता था।

मैं वहां गया, तो उस चबूतरे पर खड़ी एक शांत और गंभीर सी लड़की दिखाई दी। उम्र में मुझसे कोई तीन-चार साल बड़ी। साथ ही वे तीन शरारती लड़के, जो उस दिन खड़े हुए मुझ पर हंस रहे थे। वह लड़की शायद उनकी बड़ी बहन थी। उसने बड़ी सहानुभूति से मुझसे पूछा, "तुम कुछ ढूंढ़ रहे हो?"

सुनते ही मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैं ढूंढ़ ही तो रहा था, अपने खोए हुए साढ़े पांच आने। गिरे तो बहुत पहले थे। पर मुझे उम्मीद थी कि वे अब भी मिल जाएंगे।

कोई आवाज मेरे मुंह से नहीं निकली। बस, मैंने सिर हिला दिया।

"तुम तो बड़े परेशान लग रहे हो? क्या तुम्हारे ही पैसे गिरे थे?" अब के उसने साफ-साफ पूछा।

मैंने कहा, "हां...!"

"कितने पैसे थे, कहां गिरे थे?" उसने फिर से पूछा।

मैंने सब कुछ बताया। कहा, "मैंने बड़े दिनों में पैसे जोड़े थे। पर कबड्डी खेल रहा था, तो दूसरी टीम के लड़कों ने मुझे पकड़ लिया। मैं उनसे छूटकर नीचे गिरा और पाला छू लिया।...पर तभी मेरे पैसे भी निकलकर जमीन पर गिरे। मुझे पता नहीं, किसने चुपके से उठा लिए?"

"चिंता न करो, तुम्हारे पैसे कहीं नहीं गए। पैसे इन बदमाशों ने उठा लिए थे और मेरे कहने पर भी वापस नहीं किए।...पर अभी तुम्हें मिल जाएंगे।"

फिर उस लड़की ने अपने छोटे भाइयों को डांटकर कहा, "चुपचाप दो इसके पैसे और इससे माफी मांगो।"

उन लड़कों ने एक चमकती हुई चवन्नी, एक इकन्नी और दो पैसे मेरी हथेली पर रख दिए।

देखते ही मेरी आंखों में चमक आ गई।...हे राम, मेरे खोए हुए वे साढ़े पांच आने मिल गए और वे भी तब, जब इसकी कोई उम्मीद नहीं थी।

मैं चलने लगा, तो उस लड़की ने बड़े प्यार कहा, "आगे ये कोई भी शरारत करें, तो मुझे आकर कहना।"

मैंने सिर हिलाकर 'हां' कहा और एक भावुक खुशी से लबालब होकर घर की ओर चल दिया।

उस दिन शायद मुझसे बड़ा धन्ना सेठ इस दुनिया में कोई और नहीं था, जिसे अपना खोया हुआ खजाना मिल गया था।

तब से बरसों-बरस गुजर गए। पैसा और इकन्नी-दुअन्नी, चवन्नी तो क्या, अठन्नी तक का चलन खत्म हो गया। एक रुपए से नीचे का कोई सिक्का अब बाजार में नहीं चलता। जीवन में बहुत पैसे आए भी, गए भी।...पर वह बचपन के साढ़े पांच आने खोने का दुख और मिलने की खुशी। उसकी किसी से तुलना नहीं हो सकती। किसी से भी नहीं। वे हजारों नहीं, लाखों से बढ़कर थे। आखिर वे मेरे जेबखर्च से बचाए गए पूरे साढ़े पांच आने थे। ✪

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

◆ अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।

◆ आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।

◆ ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।

◆ संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

चम-चम करती आई दिवाली

चम-चम करती आई दिवाली
घर घर रौनक लाई दिवाली।

बच्चे बूढ़ों में उमंग है
सबके घर में पुता रंग है,
लंका जीत राम जब आये
अवध ने घर-घर दीप जलाये।
तब से प्रथा बनी दिवाली।

दिखे न चंदा रात अंधेरी
फिर भी चमके आँगन देहरी,
रोशनाई मेहताब जलाते
बम्ब पटाखे खूब चलाते।
रात अमावश रहे न काली।

छोटी बहना सज गई ऐसे
जैसे गुड़िया जादू वाली,
बड़ी बहन ने वेणी गुंथकर
चोटी गुच्छेदार सजा ली।
भाभी सज गई घुंघटा वाली।

पूजे लक्ष्मी और गणेश
बंटे बताशे और सन्देश,
इक दूजे के गले मिलें
प्रेमभाव के फूल खिलें।
दीपों की होती उजियाली,
चम चम करती आई दिवाली।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' : राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त सेवानिवृत शिक्षक। हिंदी साहित्य में गद्य, पद्य एवं बाल साहित्य में भी सभी विधाओं में लेखन। सभी विधाओं की करीब बीस पुस्तकें प्रकाशित। प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर के करीब पचास सम्मान/पुरस्कार प्राप्त।

मुफ्त के पटाखे

दो दिन बाद दिवाली थी। बाजार में खूब चहल-पहल थी। लोग जरूरत की चीजें खरीद रहे थे।

बंटी और संजू दोनों अच्छे दोस्त थे। एक ही मुहल्ले में रहते थे। उन्हें पटाखे खरीदने थे, इसलिए दोनों बाजार जा रहे थे।

घर से निकलकर दोनों चौराहे पर आए, तो वहां मोहल्ले के बच्चों की भीड़ दिखाई दी। बच्चे खूब शोर मचा रहे थे और आपस में धक्का-मुक्की कर रहे थे।

दोनों ने एक लड़के को बुलाकर पूछा, "यहां इतनी भीड़ क्यों है? क्या हो रहा है यहां?"

"यहां मुफ्त में पटाखे बांटे जा रहे हैं।" उस लड़के ने जल्दी से बताया और भीड़ में घुस गया।

बंटी भीड़ की तरफ देखते हुए बोला, "कौन बांट रहा है मुफ्त में पटाखे।" बच्चों की भीड़ के कारण पटाखे बांटने वाले का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था।

कुछ देर बाद भीड़ जब छंट गई, तो पटाखे बांटने वाले का चेहरा दिखाई दिया। वह आदमी अपना खाली झोला समेट रहा था।

दोनों उस आदमी के पास गए और उससे पूछा, "भाई साहब, आप इन बच्चों को किस खुशी में पटाखे बांट रहे थे?"

उस आदमी ने बताया, "मैं एक सामाजिक संगठन का सदस्य हूं। हमारा संगठन दिवाली की खुशी में हर साल गरीब बच्चों को मुफ्त में पटाखे बांटता है।"

"आपके संगठन का क्या नाम है?" संजू ने पूछा।

"मुझे संगठन का नाम नहीं पता।" उस आदमी ने जवाब दिया और वहां से जाने लगा।

संजू को बहुत हैरानी हुई कि यह आदमी जिस संगठन के लिए काम करता है, उसका नाम इसे पता नहीं है। कुछ सोचते हुए उसने बंटी से कहा, "कुछ गड़बड़ है।"

"अरे, छोड़ो न यार।" बंटी उसकी बांह पकड़कर खींचता हुआ बोला, "कोई भी हो, हमें क्या लेना है।"

संजू ने गंभीरता से कहा, "लेना-देना क्यों नहीं है? मुफ्त के पटाखे बांटने के पीछे इस आदमी की कोई गलत मंशा हो सकती है। अखबारों में पढ़ते हो न कि आतंकवादी दहशत फैलाने के लिए कैसी कैसी योजनाएं बनाते हैं?"

यह सुनकर बंटी को चिंता होने लगी। वह बोला, "तुम शायद ठीक कहते हो। चलो, उस आदमी का पीछा करते हैं। वह अभी अधिक दूर नहीं गया होगा।" दोनों जल्दी-जल्दी उस आदमी का पीछा करने लगे।

तभी वह आदमी दिखाई दिया। वह एक ऑटो वाले से बात कर रहा था। फिर वह ऑटो पर बैठ गया।

"चलो, हमलोग भी ऑटो में बैठ कर उस आदमी का पीछा करते हैं।" कहकर दोनों ने एक ऑटो वाले को रोका और सामने जा रहे ऑटो के पीछे चलने के लिए कहा। ऑटो वाला उसका पीछा करने लगा।

कुछ दूर जाने के बाद ऑटो एक पटाखे की दुकान के सामने रुक गया। वह आदमी ऑटो से उतरकर दुकान के अंदर गया।

दोनों दोस्त भी उसके पीछे दुकान के अंदर गए और देखने लगे कि वह क्या करता है।

"मुझे लगता है, यह आदमी सच कह रहा था।" तभी बंटी सोचता हुआ बोला, "शायद यह और पटाखे खरीदने आया है।"

तभी वह आदमी दुकानदार से कुछ बातें करने लगा। दुकान में कुछ लोग पटाखे खरीद रहे थे। ये दोनों भी ग्राहक बनकर पटाखे का मोलभाव करने लगे, मगर दोनों का पूरा ध्यान उस आदमी और दुकानदार की बातों पर था।

तभी दुकानदार अंदर काम कर रहे एक आदमी को आवाज देता हुआ बोला, "अरे विजय, मुफ्त में बांटने वाले पटाखों का बंडल ले आओ। "

अंदर से आदमी बंडल लेकर आया, तो दुकानदार ने उस आदमी से फुसफुसाते हुए कहा, "राजन, तुम पटाखे बांटकर आ गए और

अपने लेखक को जानिए

हेमंत यादव : सुपरिचित बाल साहित्यकार। राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में, विभिन्न विधाओं में सैकड़ों रचनाएं प्रकाशित। 36 वर्षों से नियमित लेखन। साहित्यिक संस्था इंद्रधनुष साहित्य परिषद का उपाध्यक्ष तथा बिहार बाल मंच का अध्यक्ष। अखिल भारतीय हिंदी सेवी संस्थान, इलाहाबाद, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, बिहार, से सम्मानित।

किसी को तुम पर जरा भी शक नहीं हुआ। तुम ये पटाखे ले जाओ, मगर अपना ध्यान रखना भाई। ये पटाखे बहुत ही खतरनाक हैं। अब देखना, बच्चे जैसे ही पटाखे छोड़ेंगे, वे मौत के मुंह में चले जाएंगे। ये पटाखे नहीं हैं, पटाखे की शक्ल में बम हैं।"

बम का नाम सुनते ही दोनों दोस्त कांप गए। दोनों ने एक-दूसरे को आंखों में इशारा किया और तेजी से दुकान से निकल गए।

"दिवाली के दिन बम विस्फोट करने की कैसी खतरनाक योजना बना रखी है इन लोगों ने।" संजू चिंतित स्वर में बोला, "अगर बच्चों को बम चलाने से रोका नहीं गया, तो गजब हो जाएगा।"

"तो क्या किया जाए दोस्त, मुझे भी अब बहुत चिंता हो रही है।" बंटी को भी चिंता होने लगी।

तभी संजू के मन में विचार आया, वह बोला, "चलो, चलकर पुलिस इंस्पेक्टर को सारी बात बता देते हैं।"

"हां, यह ठीक रहेगा।" दोनों एक ऑटो पर बैठ गए और उसे थाने चलने के लिए कहा।

दोनों ने पुलिस को सारी बात बता दी।

दोनों की बातें सुनकर पहले तो पुलिस इंस्पेक्टर को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन कुछ सोचकर वे दोनों के साथ उस मुहल्ले में गए, जहां बच्चों को मुफ्त में पटाखे बांटे गए थे।

इंस्पेक्टर ने बच्चों से पूछताछ की, तो बच्चों ने भी बता दिया कि एक आदमी उनमें मुफ्त में पटाखे बांट रहा था।

संयोग से किसी ने भी पटाखे नहीं फोड़े थे। पुलिस ने सारे पटाखे अपने कब्जे में ले लिए। बम निरोधी दस्ते को बुलाया गया। जांच के बाद उन्होंने बताया कि ये पटाखे नहीं, बम हैं। सारे बमों को निष्क्रिय कर दिया गया।

इसके बाद पुलिस ने उस दुकान पर छापा मारा और उस दुकानदार को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने दुकान से बम वाले और भी पटाखे बरामद किए, जिन्हें आतंकवादी दूसरे मुहल्ले के बच्चों को बांटने वाले थे।

इस प्रकार बंटी और संजू की सूझबूझ से बहुत बड़ी घटना टल गई।

अगले दिन अखबार में दोनों दोस्तों बंटी और संजू की फोटो के साथ पूरी खबर छपी, तो लोगों ने दोनों दोस्तों की खूब तारीफ की।

चित्र : इंदिरा

हम बन जाएँ चाचा नेहरू

अपने लेखक को जानिए

नलिन खोईवाल : दि न्यू इंडिया एश्योरंस कं. लि. में कार्यरत। विगत 35 वर्षों से लेखन क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए देश की सभी ख्यात पत्र-पत्रिकाओं में लगभग 1000 रचनाओं का प्रकाशन ।

बन ठन कर हम कोट पहनते
जेब में लाल गुलाब रखते,
खिलखिलाते फूल सा हरदम-
चाचा नेहरू से हम लगते।

मेला ठेला देखन जाते
चाट पकौड़ी मजे से खाते,
नए लिबास में सजधज कर हम-
बाल दिवस पर्व खूब मनाते।

मंच पर हम आलाप लगाते
महफिल अपनी खूब सजाते,
नाचे गाए रंग जमाएं-
पों पों बाजा ढोल बजाते।

प्रण करते हैं आज के दिन हम
सच बोलेंगे अब निस दिन हम,
नेकी से हम कभी ना डिगे-
पहले पहल इंसान बनें हम।

दया धर्म हम सदा ही रखते
मात पिता का मान भी करते,
दिखाए गुरुवर उन राहों पर-
हम आगे को बढ़ते रहते।

हर रंग में हम ढल जाते हैं
जैसा बनाओ बन जाते हैं,
संस्कारों पर ही चलकर हम -
गुमराह कभी न हो पाते हैं।

काम से कभी न हम घबराते
अपना काम समय पर करते,
खेल खेल में नलिन ये बच्चे-
बड़े से बड़ा काम कर जाते ।

बाल दिवस

अपने लेखक को जानिए

डॉ. विनोद 'प्रसून' : हिंदी संसाधक/शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं, हिंदी व्याकरण की जटिल अवधारणाओं को सरस बालगीतों के माध्यम से प्रस्तुत करने में महारथ हासिल है, बच्चों के साथ बड़ों के लिए भी लिखते हैं।

बाल दिवस है प्यारे बच्चो, तुम्हें बधाई मन से।
भरकर रखना अपनी दुनिया, निश्छल अपनेपन से।।

सदा खिलो तुम पुष्पों जैसा, नभ जैसा यश फैले।
पंथ कठिन है, चलो सँभलकर, भाव न हों बस मैले।।

क्या अच्छा है और बुरा क्या इसका ज्ञान तुम्हें हो।
अच्छे और बुरे स्पर्शों की पहचान तुम्हें हो।।

अच्छे और बुरे लोगों का अंतर तुम्हें पता हो।
करे परेशाँ तुमको कोई, झट यह बात बता दो।।

कोरोना के बाद हाँ अब फिर विद्यालय जाना है।
सावधान हम रहें हमें यह ख़ुद को समझाना है।।

मास्क पहनना, दो ग़ज़ दूरी, रखना साफ़-सफ़ाई।
ये बातें कोविड के युग में सबसे बड़ी दवाई।।

अबे-तबे से प्यारे बच्चो बात नहीं तुम करना।
मन के शब्दकोश में पावन शब्द हमेशा भरना।।

कमरे औ मोबाइल तक यह बचपन सिमट न जाए।
खेले-कूदे हर इक बच्चा सेहतमंद कहाए।।

आभासी दुनिया है झूठी, असली दुनिया जानो।
लंबी फ्रैंड लिस्ट से पहले, अपना घर पहचानो।।

घंटों डिजिटल गेम खेल न समय गँवाया जाए।
घर का समय अगर घर को दो घर खिल-खिल मुस्काए।।

ध्यान न भटके रहे लक्ष्य पर नित बढ़ते जाओगे।
ऐसा करके जीवन में तुम कभी न पछताओगे।।

तुमपर है विश्वास दी गई सीख सदा मानोगे।
बदले-बदले युग में अपना बचपन पहचानोगे।।

अनोखे दीपक

"अरे सिट्टू, कल दिवाली है। सबके चेहरे गुलाब की तरह खिले हैं और तू-तू इतना उदास? तेरी मां ने डांट पिला दी है क्या? कर रहा होगा कोई शैतानी।" दादा जी ने पूछा।

"दादू! इस बार दीवाली कैसे मनाऊंगा? मां ने चीनी लाईट खरीदने को मना कर दिया है और पापा ने तो वह झालर भी कूड़ेदान में फेंक दी, जो पिछले साल खुद ही बड़े शौक से खरीदकर लाए थे। न जाने उनको अचानक क्या हो गया है।"

"बेटा, दीवाली पर दूसरे देश की बनी लाइट, झालर, पटाखे, हम खूब खरीदते हैं। इससे हमारा पैसा विदेशों में चला जाता है। इसे तो रोकना होगा।" दादा जी ने समझाया।

"पर बिना उनके, दिवाली की रौनक तो गई।"

"कैसे चली गई? फुलझड़ी, झालर हमारे देश में भी तो बनती हैं। उनको खरीदने से घर का पैसा घर में ही रहेगा। अपने देश के बने मिट्टी के दीये जलाकर अंधेरे को भागा देंगे। एकदम स्वदेशी दिवाली मनेगी, स्वदेशी दिवाली।"

"पर बिजली की लाइट तो बहुत रोशनी देती है। उतनी रोशनी करने के लिए तो हजारों दीये चाहिएं। इतने दीये आएंगे कहां से दादू?"

"बात तो तुम्हारी ठीक है। इस वर्ष तो लाखों दीपक की मांग होगी। चलो, मनमौजी कुम्हार से पूछते हैं।"

दादू और सिट्टू को देखते ही मनमौजी बोला, "भैया हमारे तो दिन फिर गए। लो मुंह, मीठा करो। शुद्ध घी के हैं। घरवाली ने बनाए हैं। इस बार तो हजारों दीये बनाने पड़ेंगे। दो जगह से हजार-हजार के दो ऑर्डर भी मिल गए। चमत्कार हो गया। लक्ष्मी की कृपा समझ लो।"

"हां मनमौजी, अब तो हर दिवाली

चित्र : सुशील दोषी

पर तुम खुशकिस्मती का दीया जलाओगे। तुम्हारे कारण ही हम भी स्वदेशी दिवाली धूमधाम से मना पाएंगे। मेरे पोते को तो विश्वास ही नहीं हो पा रहा है कि बिना विदेशी पटाखों और दीयों के दिवाली भी मन सकती है।"

"मनमौजी काका, लाखों दीये कैसे बनाओगे? दो दिन बाद ही तो दिवाली है।" परेशान सा सिट्टू बोला।

"अरे बेटा, हमने तो दो माह पहले से ही तैयारी शुरू कर दी है । देखते जाओ, हम मिट्टी के ऐसे सुंदर-सुंदर दीये बनाएं हैं कि मन ललच जाएगा। मैं तो सोच रहा हूं, इस बार मिट्टी के साथ गोबर मिलाकर दीये बनाएं हैं।"

"गोबर के दीये कौन खरीदने आएगा?" सिट्टू ने नाक कसकर बंद कर ली।

"वह तो मैंने तुम्हें बता दिया वरना बनने के बाद तो पता ही नहीं चलता कि गोबर के बने हैं। इससे मिट्टी की बचत भी हो गई और दीवाली के बाद ये खाद बनाने के काम आ जाएंगे। इन्हें गमलों में या किचन गार्डन में डाल सकते हैं।"

"अरे वाह! ये तो जादू के दीये हो गए। तब तो मैं अपने कमरे से बाहर रखे गुलाब-चमेली के गमले में दीये रख दूंगा। उनके जादू से गुलाब बड़े बड़े हो जाएंगे।" सिट्टू एकाएक चहक उठा।

"गोबर के दीये तो एक तरह से इकोफ्रेंडली हुए। पर तुम इन्हें बनाओगे कैसे। तुम्हारा बेटा तो काम में हाथ बंटाना ही नहीं चाहता।" दादा जी ने पूछा

"हमारे तो भाग जग गए। अब तो मेरा सारा परिवार इसमें लग गया है। सबके दिमाग में नई-नई बातें उमड़ घुमड़ रही हैं। "

"हमारे लिए तो गोबर के दीये नई बात है। हमने तो कभी सुना नहीं!" दादू खुश होकर बोले।

"जरूरत पड़ने पर तरकीब अपने आप ही जन्म लेती हैं। हमारे पास गोबर का पहाड़ है, पर उसकी कीमत कभी समझी ही नहीं।"

"काका गोबर से दीपक बनाते कैसे हो? जल्दी बताओ। फिर मैं अपने दोस्तों को बताकर उन्हें हैरान कर दूंगा।" सिट्टू बहुत कुछ जानने को उतावला था।

"अरे बड़ा सरल है। सूखे गोबर को पहले महीन पीस लेते हैं। फिर उसमें मिट्टी मिलाकर गूंथते हैं। मेरी दोनों बिटियां बड़े अच्छे दीये बनाती हैं। 2-3 दिनों तक धूप में सुखाने के बाद तुम्हारी काकी बहुत से रंगों से दीयों पर चित्रकारी कर देती हैं। मैं तो गोबर में कपूर भी डालता हूं जिससे हवा खुशबू से भर जाए। इसकी एक बड़ी खासियत है। यह तेल नहीं सोखता और जलते समय इसमें घी और कपूर की खुशबू भी आती है।" मनमौजी बोला।

"अरे वाह! यह नया दीया तो कमाल का है! जब मैं छोटा था, दीवाली पर बहुत सारे मिट्टी के दिये खरीदे जाते थे। पहले पानी में कई घंटों के लिए डूबा देते थे। फिर हम भाई-बहन उन्हें निकालकर धूप में रख देते। मां कहा करतीं, ऐसा करने से दीये ज्यादा तेल नहीं पीते। गोबर के दीये से तो तेल भी बच गया और पानी में भिगोने का झंझट भी खत्म। ऐसे नए-नए विचार तुम्हें कब से सूझने लगे?" दद्दू उत्साहित से बोले।

"पहले कभी दिमाग में आया ही नहीं बाबू कि लोग बदल रहे हैं, समय बदल रहा है, लोगों की पसंद बदल रही है। उसके अनुसार अपने काम करने के तरीके में में बदलाव लाना चाहिए। उठने की तो कोशिश की नहीं, अपना काम छोटा है, हम छोटे हैं, यह सोचकर अपने को अपनी ही आंखों में गिरने लगे। आत्मनिर्भर भारत की पुकार से हम जाग गए। नतीजा सामने है।"

"मनमौजी, दीपक रोशनी ही नहीं करता बल्कि हमारे अंदर के अंधकार को भी मिटाता है। सच्चे अर्थों में तो इस दिवाली पर तुमने ही दीपक जलाया है।"

"काका अब तो मेरा दोस्त कक्कू भी दीवाली मना लेगा। मैं अभी उसे जाकर बताता हूं कि गोबर के दीये कम तेल पीते हैं। बड़ा खुश होगा। उसकी मां के पास बहुत कम पैसे रहते हैं, वह ज्यादा तेल नहीं खरीद पाती।" सिट्टू खुश होकर बोला।

"अरे बेटा, दिवाली के समय खाली हाथ न जा। ये ले गोबर के दस दीये। उसे मेरी तरफ से दे देना।"

"मनमौजी, मेरे लिए भी 100 दीये रख देना। लो, ये रुपए एडवांस में।" दादा जी ने रुपए निकाले।

"अरे बाबू, इतनी जल्दी क्यों? बाद में ले लूंगा।"

"मनमौजी! आई लक्ष्मी वापस नहीं करते।" दादा जी ने कहा, तो मुसकराकर मनमौजी ने रुपए लिए।

मनमौजी का सारा परिवार बड़े उत्साह से अनोखे दीये बनाने में जुट गया था। ✪

रचनाकार को जानिए

सुधा भार्गव : इन्हें बच्चे शुरू से ही बहुत अच्छे लगते हैं। हमेशा महसूस किया कि उनके संसर्ग में स्वर्ग सा आनंद है । बिरला हाई स्कूल कलकत्ता में 22 वर्षों तक हिन्दी भाषा का शिक्षण कार्य किया। पेंटिंग, योगा, अभिनय, कविता पाठ में अभिरुचि। बालकथा की कई पुस्तकों के साथ एक बाल उपन्यास भी आ चुका है। अब किंडल पर किताबें आ रही हैं।

19 नवंबर :
जन्मदिन पर विशेष

भारत की बेटी : इंदिरा

भारत में महिलाओं का बहुत सम्मान होता है, पर यह भी सच है कि उनके साथ होने वाले अन्याय का भी लंबा इतिहास है। फिर भी इस अन्याय की दीवार को भेदकर भारतीय महिलाएं समय-समय पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रहती हैं। इन्हीं सम्मानित वीरांगनाओं में शामिल हैं, भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी।

इंदिरा गांधी का पूरा नाम था, इंदिरा प्रियदर्शनी गांधी। जवाहरलाल नेहरू की इकलौती पुत्री इंदिरा का इलाहाबाद के आनंद भवन में 19 नवंबर 1917 को जन्म हुआ। उनकी माता कमला नेहरू और दादा मोतीलाल नेहरू भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से रूप से भाग लेते थे। इसलिए बचपन से ही इंदिरा गांधी स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी थीं। उन्होंने अपने सामने बड़े-बड़े नेताओं को अंग्रेजों का विरोध करने के कारण जेल जाते हुए देखा था। उनकी सहायता करने के लिए इंदिरा ने बहुत छोटी उम्र में लड़के-लड़कियों की एक 'वानर सेना' बनाई थी। यह वानर सेना तरह-तरह से अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंककर स्वतंत्रता सेनानियों की मदद किया करती थी।

इंदिरा अभी 20 साल की भी नहीं हुई थी कि उनकी माता कमला नेहरू की मृत्यु हो गई। इसलिए इंदिरा गांधी अपने पिता जवाहरलाल नेहरू से काफी जुड़ी रहीं और राजनीति के गुर अपने पिता से ही सीखे।

जब तक उनके पिता जीवित रहे, तब तक इंदिरा ने सक्रिय राजनीति में भाग नहीं लिया और अपने पिता के साथ काम करती रहीं। जब लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने इंदिरा गांधी को अपनी कैबिनेट में सूचना और प्रसारण मंत्री बनाया। सन 1966 में लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु होने के बाद इंदिरा

गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनीं। इस पद तक पहुंचने वाली इंदिरा गांधी भारत की पहली महिला तो थीं ही और आज 50 साल बाद भी कोई दूसरी महिला इस पद पर नहीं पहुंची।

प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी ने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध का नेतृत्व किया और पाकिस्तान के दो टुकड़े करवाकर बांग्लादेश की नींव रखी। उन्हें भारत के लौह महिला कहा जाता था अपने समय में वह काफी शक्तिशाली राजनेता मानी जाती थीं। देश विदेश में उनका बहुत सम्मान था।

1975 में आपातकाल लगाना इंदिरा गांधी का एक विवादास्पद फैसला रहा और उसके कारण 1977 के चुनाव में उनकी करारी हार हुई। करीब 3 साल बाद सन 1980 में वह धमाके के साथ फिर से प्रधानमंत्री बनकर लौटीं और अगले 4 साल तक देश का नेतृत्व किया।

इसी कार्यकाल में खालिस्तान का मुद्दा उठा और खालिस्तानी आतंकियों का सफाया करने के लिए इंदिरा गांधी ने स्वर्ण मंदिर में छिपे आतंकवादियों को पकड़ने के लिए सेना का प्रयोग किया। इससे खफा होकर उन्हीं के दो बॉडीगार्ड्स ने 31 अक्टूबर 1984 को प्रधानमंत्री आवास में उनकी हत्या कर दी।

भारत-पाक युद्ध : 1971

पाकिस्तान दो बार भारत पर आक्रमण करके हार का स्वाद चख चुका था। परंतु वह भारत को परेशान करने का कोई मौका छोड़ता नहीं था। 1971 का युद्ध भी उसने छेड़ा, परंतु इस बार इंदिरा गांधी ने उसे ऐसा सबक सिखाया कि पाकिस्तान के दो टुकड़े करवाकर उसकी बोलती बंद कर दी। पूर्वी पाकिस्तान को पाकिस्तान से अलग करके बांग्लादेश बनवाकर इंदिरा गांधी ने अपनी राजनीतिक कौशल का परिचय दिया।

हरित क्रांति

देश 1965 तक खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर नहीं था। इसके लिए सबसे पहला प्रयास लाल बहादुर शास्त्री ने किया। प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली बार इंदिरा गांधी ने इस बारे में कोशिश की कि भारत खाद्यान्न के मामले में अमेरिका की सहायता पर निर्भर ना रहे। इसलिए उन्होंने हरित क्रांति की नींव रखी। उनके इस प्रयास से भारत में कृषि के क्षेत्र में जबरदस्त सुधार देखने को मिला जिसे हम हरित क्रांति के नाम से जानते हैं। अगले कुछ सालों में भारत खाद्यान्न का आयात करने के बदले में निर्यात करने लगा।

श्वेत क्रांति

इसके बाद दूध के क्षेत्र में श्वेत क्रांति के नींव रखी गई और दूध के मामले में भी भारत आत्मनिर्भर हो गया। इसका सबसे बड़ा फायदा बच्चों को मिला। भारत के बच्चे जो दूध ना मिलने के कारण कुपोषण के शिकार होते थे, अब उन्हें दूध के लिए किसी का मुंह देखने की जरूरत नहीं थी।

इंदिरा गांधी स्मृति

एक सफदरजंग रोड, नई दिल्ली-वह बंगला, जहां इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री के रूप में रहती थीं। इसी बंगले में 31 अक्तूबर 1984 को, जब वह सुबह 9 बजे के आसपास साक्षात्कार देने अपने बंगले के लॉन की ओर जा रही थी, तो दो सुरक्षा कर्मियों ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी। बाद में इसे उनकी याद में संग्रहालय बना दिया गया। इस मेमोरियल की कुछ झलकियां

तत्कालीन प्रधानमंत्री आवास

वह रास्ता जिस पर इंदिरा गांधी को गोली मारी गई

घर में ऑफिस

दर्शक दीर्घा में अखबार की खबरें

वे कपड़े, जो इंदिरा गांधी ने हत्या के दिन पहन रखे थे

राजीव गांधी के वे कपड़े, जो हत्या के दिन उन्होंने पहने थे

डायनिंग हॉल

1980 में प्रधानमंत्री बनने का सर्टिफिकेट

वह रास्ता जिसपर इंदिरा गांधी को गोली मारी गई

बैठक जहां बड़े निर्णय लिए जाते थे

आकर्षक खिलौने

रचनाकार को जानिए

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला':
व्याख्याता (अंग्रेजी), शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय-घोटिया (छत्तीसगढ़), प्रकाशित पुस्तकें : तीन गद्य संग्रह और तीन काव्य संग्रह।

अध्यापक ठाकुर जी कक्षा सातवीं में आए। बोले, “बच्चो! कल से दशहरे की छुट्टी हो रही है पांच दिनों के लिए, यानी शुक्रवार तक।”

बच्चे खुश हो गए। ठाकुर जी फिर बोले, “दशहरे की छुट्टी का आनंद लेने के साथ तुम सबको एक गृहकार्य भी करना है और उसे कम्प्लीट करके जब स्कूल आओगे, तब लाना है।”

“सर गृहकार्य क्या करना है, जिसे स्कूल भी लाना है?” बच्चे एक स्वर में बोले।

“सबको खिलौना बनाकर लाना है, चाहे वह मिट्टी का हो, लकड़ी का हो या चाहे फूल-पत्ते, पत्थर का हो। पर स्वयं का बनाया हुआ होना चाहिए। ध्यान रहे, सुंदर हो और आकर्षक भी हो। स्कूल आने के दिन उसे अनिवार्य रुप से लाना ही है।” ठाकुर जी ने कहा।

बच्चों ने हां में सिर हिलाया। फिर छुट्टी हो गई।

दशहरे की छुट्टी खत्म हुई, तो बच्चे खुद के बनाए हुए खिलौने लेकर स्कूल आए। सबने मेज पर खिलौनों को रखा। अध्यापक ठाकुर जी ने सभी बच्चों से कहा, “तुम सब बारी-बारी अपने-अपने खिलौने के बारे में बताते जाओ।”

“सर जी! यह एक कार है। इसके सभी कल-पुर्जे बहुत महंगे हैं। इन सबको मैंने स्वयं खरीदकर बनाया है। बहुत खर्च करना पड़ा, तब यह इतना अच्छा बन पाया।” नीतिश ने सबसे पहले अपना खिलौना दिखाया।

फिर राघव बोला, “यह एक डबलस्टोरी बिल्डिंग है। इसकी डेंटिंग-पेंटिंग मैनें खुद की है।” राघव की आवाज में बड़ा दम था।

महेंद्र की बारी आई। उसने भी अपने खिलौने का मुसकराते हुए परिचय दिया, “सर जी! देखिए न, यह मैं स्वयं हूं। मैनें स्वयं को एक खिलौने का आकार दिया है। इसके लिए मैंने अपनी मम्मी से पैसा लिया है। मेहनत तो कम की है मैंने, पर पैसा बहुत लगाया है सर। मैं अच्छा लग रहा हूं?”

“यह एक एंड्राइड मोबाइल फोन

है सर। गीतिका सबको अपना खिलौना दिखाते हुए बोली, “लग रहा है ना सर, बहुत बढ़िया?”

इस तरह बच्चों ने अपने-अपने खिलौने का प्रदर्शन किया।

अब सबकी नजर नीरज पर टिकी। वह चुपचाप से सकुचाया हुआ बैठा था। अपनी बारी आने पर भी वह खिलौना नहीं दिखा रहा था। कहने लगा, “मेरा खिलौना तो इन खिलौनों के सामने कुछ नहीं है सर, मैं क्या दिखाऊं?”

“अरे नीरज, तुम जो भी बनाकर लाए हो, दिखाओ।” अध्यापक नीरज की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले।

“सर जी मेरे मम्मी-पापा तो चंद्रपुर कमाने गए हैं। घर में मैं, दादी और मेरी छोटी बहन रहते हैं। हमारे घर पैसा नहीं है सर।” नीरज अपने खिलौने वाले थैले को पीछे छिपाने लगा।

“क्या है उसमें, हम लोग भी देखेंगे।” ठाकुर जी ने बड़े प्यार से नीरज के सर पर हाथ रखा।

अंत में नीरज ने अपना खिलौना सबके सामने टेबल पर रख दिया। खिलौने को देखकर अध्यापक ठाकुर जी गद्गद हो गए। बच्चे भी बड़ी अचरज भरी नजरों से एक-दूसरे को देखते हुए नीरज के खिलौनों को निहार रहे थे।

ढेर सारे मिट्टी के छोटे-छोटे व विभिन्न आकृतियों के सुंदर दीये थे। अध्यापक ठाकुर जी मुसकराते हुए बोले, “वाह! बहुत सुंदर-सुंदर दीये बनाये हैं तुमने। यह सबसे बड़ा व सुंदर दीया किसलिए?”

नीरज ने कहा, “सर! इसे मैं दीपावली की रात को अपने स्कूल के मुख्य द्वार पर जलाऊंगा।

सभी बच्चों की नजरें अब सिर्फ नीरज की दीये पर थीं। ✪

गुलजार दिवाली

दीपों का त्योहार दिवाली ,
खुशियों की मनुहार दिवाली।
सज धज के चीकू, मीठीजी ,
मना रहे इस बार दिवाली।
गुजिया पपड़ी शक्करपारे ,
होगी लज्जतदार दिवाली।
फुलझड़ियों अनार चकरी से ,
रोशन होगी यार दिवाली।
खुशियों के रॉकेट चलेंगे ,
नभ की है चमकार दिवाली।
रंगोली से सजेंगे अंगना,
बांटेगी उपहार दिवाली।
दीप जलेंगे खुशियों वाले,
होगी फिर गुलजार दिवाली।

अपने लेखक को जानिए

महेंद्र कुमार वर्मा : भारतीत स्टेट बैंक से अवकाश प्राप्त अधिकारी। बाल पत्र पत्रिकाओं में चालीस वर्षों से सतत प्रकाशन। बाल साहित्य में कविता,कहानी,काव्य आदि देश की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित।

मिल गई दिशा

अमीरा के दिन कभी इतने बुरे नहीं थे। वह बाकायदा स्कूल जाता था और पढ़ाई करता था। उसे इस तरह से मजदूरी नहीं करनी पड़ती थी। जब से बस दुर्घटना में उसके अम्मी-अब्बू का इंतकाल हुआ, उसकी मौसी फरजाना उसे और छोटे भाई नदीम को अपने साथ ले आई।

उसके मौसा अस्पताल के बाहर टैक्सी स्टैंड का ठेका लेते थे। पार्किंग का किराया वसूलना ही उनकी कमाई का साधन था। अस्पताल के बाहर पार्किंग का किराया लेने का काम मौसा खुद करते थे, पर अब अमीरा को यह काम सिखा दिया है। उसे केवल खाने के लिए या जरूरी काम निपटाने के लिए ही छुट्टी मिलती है। इस कारण अब उसका स्कूल छूट गया है।

अब वह दिन भर पार्किंग का किराया लेने का काम करता है। पार्किंग के बाद जाने वाले वाहन के आगे वह रस्सी खींचकर तान देता है। इस तरह वाहन को रोक कर किराया लेकर वह रस्सी छोड़ देता है। रस्सी जमीन पर आ लगती है और जाने वाले के लिए रास्ता खुल जाता है।

उसका छोटा भाई नदीम अभी केवल 3 बरस का ही है। वह घर पर ही रहता है परंतु कई बार उसे नदीम को भी अपने साथ लाना पड़ता है।

ऐसे ही एक दिन मौसी को कहीं बाहर जाना पड़ा तो नदीम को उसे साथ लाना पड़ा। उस दिन एक गुब्बारे वाला वहां आकर खड़ा हो गया। नदीम गुब्बारे के लिए रोने लगा। जब उसने नदीम को समझाना चाहा कि गुब्बारा खरीदने के लिए पैसे चाहिए। उसने हथेली के पंजे को पूरा फैलाकर बताया कि 5 का नोट चाहिए, तब वह एक गुब्बारा ले सकता है।

नदीम को भाई की बात पर विश्वास नहीं हुआ कि भाई के पास रुपए नहीं है। क्योंकि पार्किंग किराए से मिली राशि से उसका बैग आधा भरा हुआ था।

अमीरा अब नदीम को समझाने लगा कि वह रुपए मौसा के हैं। उन्हें देने हैं, हम इन्हें खर्च नहीं कर सकते पर यह बारीक बात नदीम की समझ में कहां आती? उसने रोना शुरू कर दिया। और तो और जमीन पर लौटने लगा। फिर उठकर अमीरा से बैग छीनने लगा। तब अमीरा को गुस्सा आ गया और उसने गुस्से में भरकर उसे एक चांटा मार दिया।

नदीम सहमकर अपने भाई से चिपक गया और सिसकी भरने लगा। थोड़ी देर बाद रोता हुआ नदीम सो गया। अमीरा ने उसे छाया में तौलिया डालकर सुला दिया।

अमीरा का मन उदास हो गया। आज उसने अपने छोटे भाई को मारा है.... आज से पहले उसने कभी छोटे भाई को नहीं मारा था। छोटे के लिए तो वही मां, बाप, भाई है। तभी तो भाई से मार खाकर भी वह उसी के चिपक गया। एक वह है, जो उसे एक गुब्बारा भी नहीं दिला सका। नदीम के गालों पर आंसुओं की सूखी लकीर देख अमीरा का मन रोने का होने लगा।

उसने सोच लिया कि जब नदीम सोकर उठेगा, तो वह उसे गुब्बारा जरूर दिलाएगा। अब वही उसका सब कुछ है। उसे उसका ध्यान रखना है। उसने 5 रुपए बैग में से निकालना चाहा, तभी उसकी अम्मी की आवाज उसे सुनाई दी "कितनी भी मुसीबत आ जाए बेटा, पर अपना ईमान मत डिगाना।' और अमीरा के ख्यालों में उनका चेहरा उभर आया। वह एकदम से सकपका गया।

उसके मन ने उसे लताड़ा कि यह क्या गुनाह करने वाले थे तुम? यह तो मौसा के साथ धोखा होगा। नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकता। अभी अब्बू के बाद एक वही हमारा सहारा हैं। अमीरा ने आसमान की ओर देखते हुए कहा, "शुक्रिया परवरदिगार, तुमने मुझे गुनाह से

अपने लेखक को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। साहित्यिक गतिविधियों में ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

बचा लिया..., पर मैं क्या करूं, नदीम के लिए क्या मैं कुछ नहीं कर सकता ? ”

तभी एक आशा की किरण उसके मन में चमकी। सिस्टर रोमिला की हंसी की आवाज उसके कानों में गूंजी। 'रोमिला सिस्टर घर जाने वाली है।' यह सोच उसने इधर-उधर देखा। उसे एक फटा कपड़ा नजर आया। बस फिर क्या था, उसने उसे उठा लिया और उनकी स्कूटी अच्छे से सफाई कर चमका दी।

जब रोमिला सिस्टर बाहर निकली तो उसे अपनी स्कूटी साफ चमकती नजर आई। वह जाते समय अमीरा से अवश्य बात करती है। उसका हालचाल पूछती हैं और कभी चॉकलेट भी दे देती है।

सिस्टर ने उससे पूछा, “मेरी स्कूटी की सफाई किसने की ?”

उत्तर देने के बजाय अमीरा शरमाकर हंस दिया। सिस्टर ने उसे 5 का नोट पकड़ा दिया। अमीरा खुशी के मारे उछल पड़ा। अपनी मेहनत की पहली कमाई का हरे रंग का कड़क नोट उसमें साहस भर रहा है। ईमानदारी से की गई कमाई से उसकी आंखें चमक रही है।

उस नोट से उसने नदीम को गुब्बारा खरीद दिया। जिसे पाकर नदीम खुश हो गया। इधर अमीरा को भी एक नई दिशा मिल गई है ईमानदारी से जीवन जीने की। उसने सोच लिया कि अब वह कमाना भी शुरू कर देगा, ताकि कभी पैसे की तंगी के कारण बेईमानी का ख्याल उसके मन में ना आए।

तब तक मौसा जी खुद ड्यूटी पर आ गए थे। सारी घटना उन्होंने अपनी आंख से देखी थी। उन्हें खुद पर शर्म आने लगी।

अगले दिन अमीरा फटाफट टैक्सी स्टैंड जाने के लिए तैयार होकर आ गया। मौसी ने देखकर पूछा, “कहां जाने की तैयारी है ?”

“मौसा जी का साथ टैक्सी स्टैंड।” अमीरा सहमकर बोला।

“तब स्कूल कैसे जाओगे ? स्कूल जाने का मन नहीं करता ?” मौसी मुसकराकर बोलीं।

“हां बेटा, अब तुम स्कूल जाओगे। तुम्हें अपने या भाई के लिए कमाने की जरूरत नहीं।” मौसा जी प्यार से उसके बालों में उंगली फेरते हुए बोले।

इतने दिनों बाद प्यार पाकर अमीरा की आंखें भर आई, वह कुछ बोल नहीं पाया। बस, भागकर मौसी के गले लग गया।

अमीरा के जीवन को नई दिशा मिल गई थी। वह बहुत खुश था। यह दीपावली का उसके लिए अनमोल उपहार था। ✪

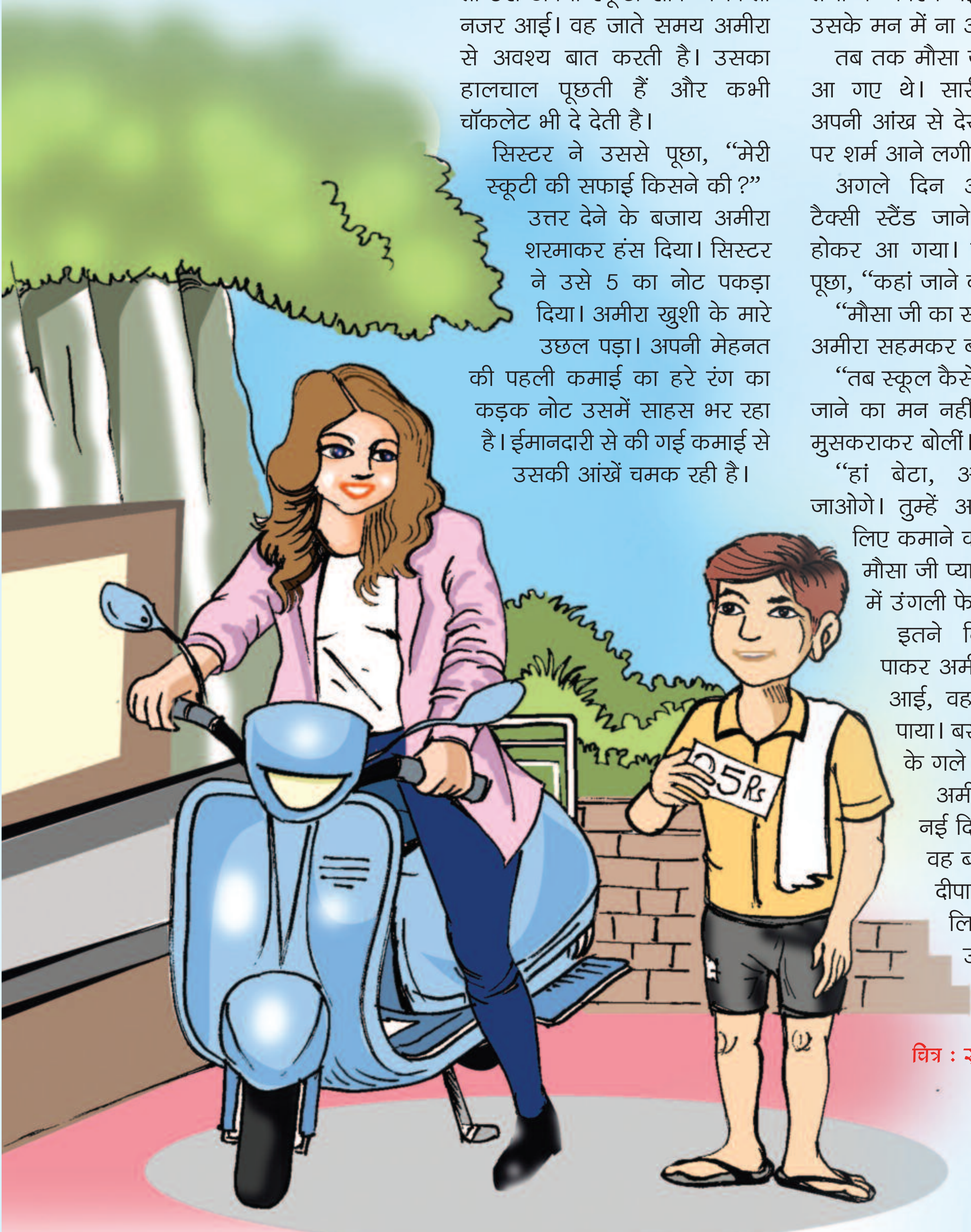

चित्र : सुशील दोषी

हरियाली का सागर और 'मालपे बीच'

दोस्तो, आपने पश्चिम घाट के बारे में अवश्य सुना होगा। हमारा देश दक्षिण में तीन ओर समुद्र से घिरा है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिन्द महासागर। अरब सागर के तट को पश्चिम घाट कहते हैं, जो दो भागों में बंटा है। उत्तरी हिस्सा कोंकण तट और दक्षिणी केरल की तरफ वाला हिस्सा मलाबार तट। आज मैं आपको मलाबार तट पर बसे एक मनोरम शहर उडूपी और उससे जुड़े कुछ और स्थानों के बारे में बताती हूं। उनके विषय में जानकर आपको भी अच्छा लगेगा।

उडूपी कर्नाटक राज्य का एक शहर है, जो अरब सागर के किनारे बसा है। यह बैंगलोर से लगभग 422 कि.मी. दूर है। समुद्र के तट पर होने के कारण वहां न सर्दी होती है न ही भारत के उत्तरी क्षेत्र जैसी गरमी।

26 दिसंबर की सुबह हम लोग बंगलुरु से शिमोगा के लिए चल पड़े थे। शिमोगा हमारे उडूपी के सफर का एक पड़ाव था। यह कर्नाटक के पश्चिम में हरे-भरे पहाड़ों वाला खूबसूरत शहर एक जिला भी है। शिमोगा से लगभग चालीस कि.मी. दूर तुंगा नदी है। यही तुंगा नदी जब भद्रा नदी से मिलती है, तब 'तुंगभद्रा' बन जाती है। यहां हम लोग 'विहंगम' रिजॉर्ट में रुके थे। यहां नारियल और सुपारी के पेड़ बहुत मिलते हैं। पक्षियों की जानी-अनजानी मीठी बोलियां, कितने ही रूप-रंग के पेड़-पौधे। सुपारी के लंबे और ऊंचे पेड़, जिनके ऊपर सुपारी के गुच्छे टंगे हुए थे। सब कुछ बहुत ही लुभावना था। नारियल और सुपारी के लंबे तनों से काली मिर्च की लताएं लिपटी थीं, जिनमें काली मिर्च की लंबी झूमरें लटक रही थीं। दूसरी तरफ कॉफी के पौधों में कॉफी के सुर्ख दाने झरबेरी से भी अधिक रसमय दिख रहे थे।

दूसरे दिन सुबह हम लोग हाथी-सफारी गए, जहां चार माह के बच्चे से लेकर पन्चानवे साल के हाथी को देखा। हां, हाथियों को नाश्ता कराने का तरीका पहली बार देखा। एक हाथी को चार कच्चे नारियलों के पतले टुकड़े बालटी भर दाने में मिलाकर उसे धान के रेशों में भरकर हाथी को खिलाया जाता है। इतने

बलिष्ठ जानवर के पैरों के पास बैठकर उसे खाना खिलाना और देखभाल करना क्या आसान है? महावत के इशारे पर हाथियों ने अपनी सूंड़ से सबको बारी-बारी माला पहनाई। हाथी-सफारी में सबको खूब आनंद आया, लेकिन मुझे खास अच्छा नहीं लगा। माना कि वह बलवान होता है, फिर भी उसकी पीठ पर छह-सात लोगों को बिठाकर घुमाना जानवर पर अत्याचार ही है।

अगले दिन लगभग दो हजार सात सौ फीट ऊंचे कुन्दाद्रि पर जैन तीर्थंकर श्री पारसनाथ का तपस्थल देखा। कुन्द पर्वत की सीधी चढ़ाई पर ड्राइवर महोदय तो बड़े दक्षता के साथ 'इनोवा' को दौड़ाए जा रहे थे पर हमारी सांसें जैसे थमी रहीं, जब तक कि ऊपर नही पहुंच गए। इतनी ऊंचाई पर एक छोटे से स्मारक को बहुत सहेजकर रखा गया है। पत्थरों में भी फूल खिल रहे थे। यह देख वहां के व्यवस्थापकों के प्रति हम सहज ही नत-मस्तक हो गए।

वहां से 'औगुम्बे' जाने का विचार था। सुन रखा था कि औगुम्बे में सूर्यास्त का दृश्य बहुत ही सुंदर और आनंदमय होता है किंतु सूर्यास्त होने में काफी देर थी, इसलिए हम लोग श्रृंगेरी मठ गए। यह आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठों में से एक है। यहां से पश्चिमी घाट का प्रारम्भ है। वहां पहुंचने के लिए पहाड़ों से उतरते हुए रास्ता पार करना, एक बेहद रोमांचक अनुभव था। जैसे इनोवा गाड़ी एक नाव हो, जो हरियाली के सागर की लहरों में ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर हिचकोले खाती गहरे में राह बनाती चली जा रही हो।

मुझे भवानी प्रसाद जी की कविता की पंक्तियां याद आ रही थीं-

"एक सागर जानते हो?
उसे कैसा मानते हो?
ठीक वैसे घने जंगल,
ऊंघते अनमने जंगल।"

रास्ते भर अनेक प्रकार के ऊंचे सघन मनोहर वृक्षों का विशाल वैभव हमें निःशब्द बना रहा था। कोई पेड़ लाल पल्लवों के कुरते पहने, कोई संन्यासियों की सी लंबी दाढी रखे हुए, कोई पेड़, मानो आसमान को सहारा देने की धुन में बेहिसाब लंबा, तो कोई जगह का अतिक्रमण किए हुए फैला हुआ। किसी के मजबूत पत्ते इतने चिकने, मानो तेल मालिश करवाकर आए हों, तो किसी के पत्ते कतरनों जैसे डिजाइन वाले। किसी के पत्ते मित्रता के लिए हाथ बढ़ाते हुए प्रतीत होते थे। मन उनसे परिचित होने के लिए आतुर था। कितना अच्छा होता, कि हर पेड़ भी अपना परिचय-पत्र भी गले में लटकाए रहे। परिचय करना आसान हो जाए।

इसके दूसरे दिन कोल्लूर में मूकाम्बिका देवी का मंदिर देखा। मंदिर चाहे कोई भी हो, अपने इष्ट के दर्शनों के लिए जैसी श्रद्धा धैर्य और अनुशासन दक्षिण भारत में देखा है वह एक उदाहरण है।

शाम को हम उडूपी पहुंचे। वहां श्री कृष्ण-मठ एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थान है।

पहले हम श्री कृष्ण-मठ गए, लेकिन दर्शनार्थियों की कतार की लंबाई देख रुकने का साहस नहीं हुआ। पता चला कि सुबह साढ़े चार बजे भीड़ नहीं मिलती। लेकिन चार बजे भी दर्शन करने वालों की लाइन लगी थी। लेकिन हैरानी तब हुई, जब कृष्ण भगवान के दर्शन केवल दो पल के लिए वह भी एक जालीदार खिड़की से ही हो रहे थे। उस क्षणिक झलक के लिए लोग घंटों

अपने लेखक को जानिए

गिरिजा कुलश्रेष्ठ : व्याख्याता (हिन्दी), कविता, गीत, कहानियां, लघु-कथाएं, बाल-कहानियां, कविताएं, लघुनाटिकाएं विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। छोटी-बड़ी दस पुस्तकें प्रकाशित। दो बाल कहानियां चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट से पुरस्कृत

लाइन में लगे अपने नंबर की प्रतीक्षा करते हैं, यह सोचकर हैरानी हुई। उनकी श्रद्धा के आगे मैं तो अभिभूत हो गई, पर मन में यह सवाल बार-बार उठ रहा था कि आखिर खिड़की से इस तरह भगवान के दर्शन कराने के पीछे क्या कारण हैं? वह कारण बताया सुधा प्रिया ने। वह आंध्रप्रदेश से हैं। तेलगू के अलावा वह कन्नड़ व हिंदी भी जानती है।

उसने कहानी यों बताई कि, एक गरीब आदमी के मन में भगवान के दर्शनों की बड़ी चाह थी पर मंदिर के पंडित-पुजारियों ने उसे अछूत कहकर भगा दिया और मंदिर के किवाड़ लगा दिए, लेकिन वह दर्शन किए बिना नहीं जाना चाहता था। इसलिए वह किसी तरह छिपकर खिड़की से ही भगवान को देखने लगा। भगवान ने उसकी लगन देख अपना मुख खिड़की की ओर मोड़ लिया। तबसे भगवान की प्रतिमा का मुख खिड़की की ओर है। लो, अब सब इसी तरह दर्शन करो, जैसे उस गरीब भक्त को करने पड़े।

शाम को हम लोग 'मालपे-बीच' गए। यह हमारी यात्रा का सबसे रोमांचक अनुभव था। लहराता अरब सागर साफ-सुथरा लंबा 'बीच' (तट) सबको खींचती पछाड़ती उत्तुंग लहरें, बांहें पसारे, मानो सूरज को बुला रहीं थीं।

कुछ देर बाद अंततः सूरज लहरों की गोद में समा गया। अद्भुत दृश्य था। जिसने पहली बार जल का ऐसा उन्मत्त अपार विस्तार देखा हो, वह कहां तक चकित व विमुग्ध न होगा। मेरा वही हाल था। उस विशाल सागर के सामने मन बच्चों की तरह उछल रहा था।

कभी अवसर मिले तो उडूपी जरूर घूमने जाना। ✪

घड़ी

एक घड़ी मे कांटे तीन
दिखते भी हैं ये रंगीन।

छोटा कांटा घंटों को
बड़ा बताये मिनटों को
तीसरा तो है खूब महीन।
एक घड़ी मे कांटे तीन।।

तीसरा है सेकंड बताता
जल्दी जल्दी चलता जाता
भारत, जापान या हो चीन।
एक घड़ी मे कांटे तीन।।

जल्दी-जल्दी सुबह जगाती
मीठा सा अलार्म बजाती
पढ़ने मे हम रहते लीन।
एक घड़ी मे कांटे तीन।।

घड़ी बड़ी है काम की
ये घड़ी नहीं आराम की
सुनो इसकी ट्रिन ट्रिन ट्रिन।
एक घड़ी मे कांटे तीन।।

अपने लेखक को जानिए

अरुण गिजरे : सेवा निवृत्त सहायक संचालक कृषि (जैविक खेती विशेषज्ञ)। साथ साथ साहित्य लेखन। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में लेख, कविताएं, लघुकथाएं, बाल कविताएं, खेती से संबंधित लेख आदि प्रकाशित।

नन्हे दोस्त

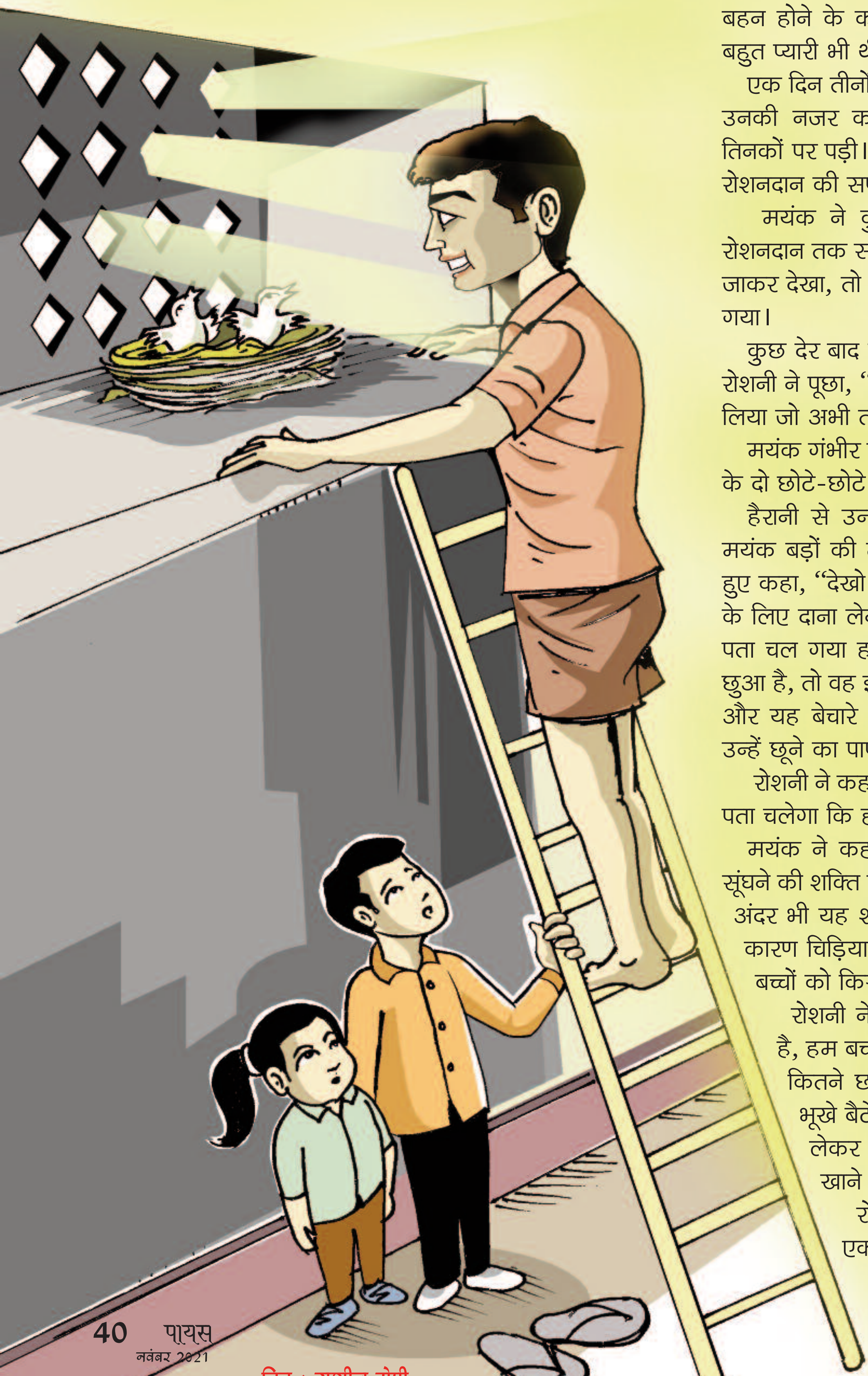

चित्र : सुशील दोषी

मयंक, दीपक और रोशनी तीनों बहन-भाई थे। इनमें मयंक सबसे बड़ा था। उसकी उम्र तेरह साल थी। दीपक दो साल छोटा था, लेकिन रोशनी उनसे पांच साल छोटी थी। लेकिन इकलौती बहन होने के कारण वह अपने दोनों भाइयों की बहुत प्यारी भी थी।

एक दिन तीनों छत पर खेल रहे थे कि अचानक उनकी नजर कमरे के रोशनदान में पड़े कुछ तिनकों पर पड़ी। उन्होंने सोचा, चलो मिलकर हम रोशनदान की सफाई कर देते हैं।

मयंक ने कुर्सी के ऊपर स्टूल रखा और रोशनदान तक सहजता से पहुंच गया। उसने ऊपर जाकर देखा, तो उसका मुंह आश्चर्य से खुला रह गया।

कुछ देर बाद मयंक नीचे उतरा, तो दीपक और रोशनी ने पूछा, "भैया! ऐसा ऊपर आपने क्या देख लिया जो अभी तक सन्नाटे में हो?"

मयंक गंभीर स्वर में बोला, "ऊपर मैंने चिड़िया के दो छोटे-छोटे बच्चे देखे।"

हैरानी से उन दोनों की आंखें फटी रह गईं। मयंक बड़ों की तरह गंभीर होकर उन्हें समझाते हुए कहा, "देखो रोशनी! चिड़िया अभी अपने बच्चों के लिए दाना लेने के लिए गई हुई है, अगर उसे पता चल गया हमने उसके बच्चों को देखा है या छुआ है, तो वह इन बच्चों को छोड़कर चली जाएगी और यह बेचारे बच्चे अनाथ हो जाएंगे। इसलिए उन्हें छूने का पाप हम कभी नहीं करेंगे।"

रोशनी ने कहा, "लेकिन भैया! चिड़िया को कैसे पता चलेगा कि हमने उसके बच्चों को छुआ है?"

मयंक ने कहा, "जिस तरह इनसान के पास सूंघने की शक्ति होती है उसी प्रकार पशु-पक्षियों के अंदर भी यह शक्ति बहुत अधिक होती है। इसी कारण चिड़िया को पता चल जाता है कि उसके बच्चों को किसी ने छुआ है या नहीं।

रोशनी ने उत्सुकता से कहा, "चलो ठीक है, हम बच्चों को छुएंगे नहीं, लेकिन देखो न कितने छोटे-छोटे बच्चे हैं। कितनी देर से भूखे बैठे हैं। अभी तक इनकी मम्मी दाने लेकर नहीं आई। चलो, हम इन्हें कुछ खाने के लिए दे देते हैं।"

रोशनी रसोई से कुछ चावल के दाने एक कटोरी में जल्दी से ले आई और

बोली, "अब मैं ऊपर चढ़कर चिड़िया के बच्चों को देखूंगी भी और उन्हें खाने के लिए चावल भी दूंगी।"

मयंक ने डांटते हुए कहा, "तुम अगर गिर गई और हाथ-पैर टूट गए तो... ? "

दीपक बोला, "भैया! आपने तो चिड़िया के बच्चों को एक बार देख लिया है। प्लीज मुझे देखने दो न, आप मेरी थोड़ी सहायता करो, मैं संभलकर चढ़ जाऊंगा।"

मयंक को दीपक पर तरस आ गया। वह बोला, "ठीक है, लेकिन जरा संभलकर चढ़ना।"

नीचे से मयंक ने स्टूल को पकड़ा और डगमग-डगमग करता हुआ दीपक स्टूल के ऊपर चढ़ गया। जैसे ही वह सीधे खड़े होकर नन्हे नन्हे बच्चों को देखने लगा, वैसे ही चिड़िया उसके सिर पर आकर फड़फड़ाने लगी। घबराहट में उसका पैर फिसला और वह नीचे गिर पड़ा। अगर उसे मयंक नहीं संभाल लेता, तो निश्चित रूप से उसे बहुत ज्यादा चोट लग जाती।

मयंक उस पर गुस्सा हुआ, तो दीपक अपनी परवाह न करते हुए एकदम चिंतित स्वर में बोला, "भैया! चिड़िया ने मुझे देख लिया। अब वह अपने छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर चली गई तो हम क्या करेंगे?"

मयंक बोला, "चिंता मत करो। अगर चिड़िया छोड़ भी गई, तो हम इन बच्चों को पाल लेंगे।"

तीनों बच्चे दरवाजे की ओट में छिपकर यह देखने लगे कि चिड़िया अपने बच्चों को छोड़कर चली जाती है या नहीं। लेकिन ख़ुशी से तीनों चहक उठे, जब उन्होंने देखा कि चिड़िया अपनी चोंच से एक-एक कर दाना उन बच्चों की चोंच में डाल रही है।

दीपक ने फुसफुसाकर कहा- "भैया! देखो चिड़िया अब हम से गुस्सा नहीं है, उसने हमें नहीं पहचाना।"

मयंक ने कहा, " अरे बुद्धू ! वह तो बच्चों को तब छोड़ती, अगर हम चिड़िया के बच्चों को अपने हाथों से छू लेते।"

रोशनी ने कहा, "अब हम चिड़िया के बच्चों को रोज देखेंगे...।

अपने लेखक को जानिए

सरिता गुप्ता : दो काव्य संग्रह, नई डगर और सिमटती सुबह, एक कहानी संग्रह एहसास के पल और दोहा संग्रह सरिता सतसई प्रकाशित। अनेक साझा संकलन में रचनाएं प्रकाशित। 4 दर्जन से अधिक पुरस्कार प्राप्त। बड़े-बड़े मंचों से कविता पाठ और कुशल मंच संचालिका। वर्तमान में शिक्षिका के रूप में कार्यरत

मयंक ने समझाते हुए कहा, "अरे! वे तो हफ्ते भर में ही उड़ना सीख जाएंगे और फिर फुर्र से उड़ जाएंगे। "

वे तीनों आपस में बातें कर ही रहे थे कि उन्हें मम्मी के बोलने की आवाज आई।

तीनों नीचे की तरफ चल दिए। मां ने सब बच्चों को खाने के लिए ठंडा-ठंडा तरबूज दिया। कुछ ही देर में तीनों बच्चे अपनी पढ़ाई का काम निपटाकर, शाम के भोजन से निपट लिए। तीनों का मन तो चिड़िया के बच्चों की तरफ ही लगा हुआ था, पर कुछ समझ नहीं आ रहा था कि इतनी रात में वह उन नन्हे बच्चों को कैसे देखें? वे देखना चाहते थे चिड़िया के बच्चे कैसे सोते हैं? क्या चिड़िया उन्हें लोरी गाकर सुनाती है?

घर के सभी सदस्य सो गए, मगर उन तीनों की आंखों से नींद कोसों दूर थी। नन्ही रोशनी के दिमाग में सबसे ज्यादा ख़ुराफात थी। सोचते-सोचते तीनों को कब नींद आ गई, उन्हें पता ही नहीं चला।

"बच्चो! जल्दी उठो, कितनी देर हो गई है।" मां की आवाज से तीनों की आंखें खुलीं, तो वे हड़बड़ाकर उठे। तीनों फुर्ती से अपने दैनिक कामों को निपटाने लगे। मां भी हैरान थीं कि आज बच्चे इतनी जल्दी-जल्दी कैसे कामों को निपटा रहे हैं?

तीनों बच्चे फटाफट नाश्ता कर ऊपर छत की तरफ चल दिए। मां ने कहा, "अरे सुबह-सुबह वहां क्या करने जा रहे हो?"

तीनो चुप थे। इतने में पिताजी ने कहा, "अरे बच्चे हैं, जाने दो।"

तीनों बहुत तेजी से सीढ़ियां चढ़ते हुए ऊपर पहुंच गए। ऊपर उन्होंने देखा कि चिड़िया वहीं रोशनदान पर बैठी हुई थी। उसके साथ एक मोटी सी काली सी चिड़िया और बैठी थी। उन्होंने अनुमान लगाया शायद यह चिड़ा होगा।

तीनों अनमने से अन्य कामों में लग गए। तभी चिड़िया फुर्र से उड़कर रोशनदान से बाहर की तरफ निकल गई। चिड़िया को उड़ते देखते ही तीनों उठे, मगर वह मोटी चिड़िया अभी भी वहीं घोंसले के पास ही बैठी हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो बच्चों की मां चिड़िया उसे चौकीदारी करने के लिए छोड़कर चली गई है।

दीपक को एक तरकीब सूझी और उसने बड़ी तेजी से अपनी गेंद को छत की तरफ उछाला। गेंद को अपनी तरफ आते देख, दूसरी चिड़िया

भी फुर्र से उड़ गई।

अब उन्होंने कुर्सी के ऊपर स्टूल रखकर नन्हे बच्चों को देखने की तैयारी कर डाली। आज सबसे पहले चढ़ने वालों में दीपक था। दीपक ने देखा कि बच्चे कल ही कल में कुछ बड़े हो गए हैं, उनके नन्हे नन्हे पंख भी नजर आ रहे थे।

इस प्रकार एक एक कर कर तीनों ने फिर से बच्चों को देखा। तीनों की खुशी का ठिकाना न था। उन्हें ऐसा लगा जैसे पता नहीं उन्होंने कितना बड़ा काम कर डाला है। फिर निश्िंचत होकर वे अपने कामों में लग गए। अब सुबह-शाम यह उनकी दिनचर्या का एक हिस्सा बन गया था।

पर एक शाम को तीनों जब बच्चों को देखने के लिए गए तो देखा, घोंसला बिल्कुल खाली पड़ा है। तीनों का मुंह लटक गया था। उनका किसी भी काम में मन नहीं लग रहा था। मां ने जब तीनों बच्चों को अनमना-सा देखा तो पूछा, "अरे क्या हुआ? कैसे इतने उदास हो?"

तब रोशनी ने सारी बात बताई। मां ने मुसकराते हुए उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "अरे! तो इसमें उदास होने की क्या बात है? चिड़िया के बच्चे बड़े हो गए, तो उन्हें तो आसमान में उड़ने जाना ही है। अगर तुम्हें देखना है, तो आसमान में उड़ती हुई रंग-बिरंगी चिड़ियों को देखो। उनमें तुम्हारे नन्हे दोस्त भी जरूर होंगे।"

मां की बात सुनकर रोशनी आसमान में उड़ते हुए पक्षियों को एकटक निहारने लगी। उसे हर उड़ते हुए पक्षी में अपनी चिड़िया के नन्हे बच्चे नजर आ रहे थे। ✪

सो गया घोड़ा खड़े-खड़े

नीचे सड़क, ऊपर पहाड़ी,
सड़क पर चली घोड़ा गाड़ी!
आगे गाड़ी, पीछे गाड़ी,
जाम हुआ अगाड़ी-पिछाड़ी!
पीं पो, पीं पो, चिल्लम चो,
धक्का-मुक्की, पिल्लम पो!
क्या हुआ भाई अरे, अरे,
सो गया घोड़ा खड़े-खड़े!

अपने लेखक को जानिए

मेराज रज़ा : अध्यापक और प्रसिद्ध युवा कवि। 'मेरे मन का फूल' प्रकाशित बाल कविता संग्रह है। हिन्दी बाल साहित्य शोध संस्थान, दरभंगा द्वारा आचार्य रामलोचन शरन शिखर बाल साहित्य सम्मान।

दिवाली गिफ्ट

अपने लेखक को जानिए

मधु गोयल : पिछले 15 सालों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 200 कहानियां, कविताएं व लेख (बच्चों और बड़ों की) निरंतर देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित।

चारों तरफ दिवाली की सफाई चल रही थी। लोगों ने वीकेंड पर दिवाली की शापिंग भी शुरू कर दी थी। संकल्प की लिस्ट भी तैयार थी।

कोरोना की वजह से बाजारों की जो रौनक फीकी पड़ चुकी थी, वो फिर लौट आई थी।

संकल्प ने अपने साथ छोटी बहन गुड़िया को भी लगा लिया। वह पापा के पास गया। संकल्प को देख पापा निखिल ने कहा, "बोलो बेटा, क्या चाहिए, तुम कुछ कहना चाहते हो?"

"हां पापा, मैं जानना चाहता हूं कि दिवाली पर क्या सरप्राइज है, आतिशबाजी तो लाएगें ना आप!"

"देखो बेटा, पटाखे जलाने से वायु प्रदूषण होता है, इसलिए 'नो पटाखे' समझे!"

संकल्प की मम्मी श्वेता बोलीं, "निखिल, तुम ग्रीन पटाखे ला देना।"

"अच्छा भई, ठीक है। लेकिन, संकल्प बेटा, दिवाली क्यों मनाते हैं, पता है आपको?

हां पापा, इस दिन रामचंद्र जी चौदह वर्ष का वनवास पूरा कर लौटे थे और नगर वासियों ने उनके आगमन की खुशी में दीपमालाएं सजाई थीं, खुशियां मनाई थी।"

"एक बात और बेटा, इस त्योहार का संबंध ऋतु परिवर्तन से भी है। इसी समय से शरद ऋतु का आगमन लगभग हो जाता है।"

अगले दिन निखिल ने चरखी और फुलझड़ी वाला बैग बच्चों के हाथ में थमा दिया, बच्चे खुश थे। उधर मांजी ने आवाज लगाई, "श्वेता, आज धनतेरस है, बाजार जाकर बर्तन ले आना।"

बच्चे अपना आतिशबाजी वाला बैग दादी के पास ले गए, दादी बच्चों की खुशी में खुश थी।

संकल्प बोला, " दादी अभी आप ने कहा, आज धनतेरस है। इसके बारे में बताइए।"

बेटा, इस दिन भगवान विष्णु ने धन्वंतरि का अवतार लिया था, इस उपलक्ष्य में धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है, यह त्योहार दिवाली आने की सूचना देता है।"

अगले दिन सुबह के समय संकल्प पार्क में साइकिल चलाने के लिए गया, तो देखा, स्वीपर बब्बन काका कूड़े के ढेर से अधजली फुलझड़ी निकाल रहे हैं, संकल्प ने पूछा, "काका यह क्या कर रहे हो?"

"अरे बेटा, मेरी नौकरी चली गई है। इसमें कुछ अधजली फुलझड़ियां अपने बेटे के लिए निकाल रहा था।"

संकल्प भावुक हो गया, उसने कुछ सोचते हुए कहा, "काका अभी रुको, जाना नहीं।

संकल्प घर आया और मम्मी को जग्गू के बारे में सारी बात बताई।

श्वेता ने एक मिठाई के डिब्बे के साथ मोमबत्ती, फुलझड़ियां और सजावट का सामान भी दिया।

संकल्प फिर पापा के पास गया और बब्बन के बारे में बताया। पापा सोचकर बोले, "उसे मेरे से मिलने को कहना। मैं उसे काम दूंगा।"

संकल्प वापस बब्बन काका के पास गया और सामान काका को देकर बोला, "यह मेरा दिवाली गिफ्ट है जग्गू के लिए। और काका, आप पापा से मिल लेना। वह आपको नौकरी पर रख लेंगे।"

इतना प्यार और इतना अच्छा दिवाली गिफ्ट देखकर, बब्बन की आंखें भर आईं। ✪

तीनी की उलझन

कई सारी रंग-बिरंगी तितलियां वन में उड़ रही थीं। पीली, काली, मिश्रित रंग की तितलियों का परिवार भी जंगल में खिले फूलों पर अठखेलियां कर रहा था।

इस परिवार की मुखिया बिट्टी थी। आगे-आगे वह जा रही थी उसके पीछे दर्जन भर नई तितलियां उड़ रही थीं। नई तितलियां बड़े कौतूहल से वन को देख रही थी। यह उनका दुनिया में पहला अनुभव था। उड़ते हुए वे मां से ढेर सारे प्रश्न पूछ रही थी। जिनका उत्तर बिट्टी बड़ी समझदारी से दे रही थी।

बिट्टी अपने बच्चों का ध्यान रखते हुए उन्हें बगीचे मे घुमा रही थी। उनमें सबसे तेज शिन्नी तितली थी। वह हर चीज के बारे में मां से जानकारी ले रही थी। सबसे पीछे उडने वालों में तीनी थी। वह कुछ-कुछ देर बाद फूलों पर बैठ जाती और फिर उठने का नाम न लेती। शिन्नी ने उसे कई बार टोका, "तीनी जल्दी करो। वहां क्या कर रही हो?"

"फूलों का रस पी रही हूं।" तीनी बोली।

"हम सबने फूलों के रस से अपना पेट भर लिया है। तुम्हें इतनी देर क्यों लग रही है?" शिन्नी बोली।

"तुम सब काम जल्दी कर लेती हो। मुझे थोड़ा समय लगता है।" तीनी ने उत्तर दिया।

"तुम भी जल्दी से काम निपटाने की आदत डाल लो।" शिन्नी ने उसे सलाह दी। पूरे दिन तीनी के कारण उन्हें जगह-जगह रुकना पड़ रहा

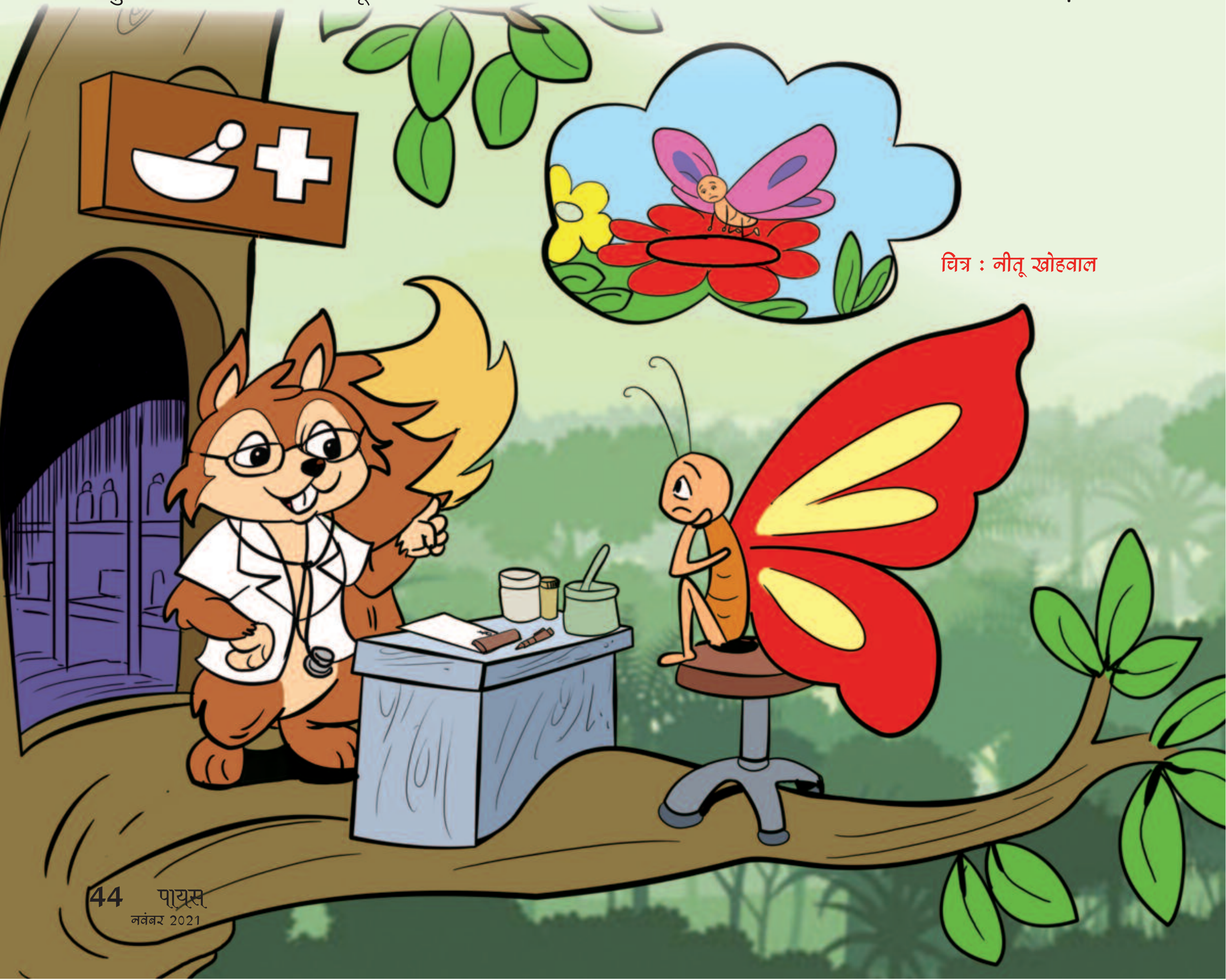

चित्र : नीतू खोहवाल

था। एक बार शिन्नी तितली गुस्से से बोली, “ मां, तीनी को अकेला छोड़ दो। हमे नहीं उड़ना इसके साथ।”

“कैसी बातें कर रही हो शिन्नी ? वह तुम्हारी बहन है। ” बिट्टी बोली।

“मेरी और भी बहुत सी बहने हैं, लेकिन वे इसकी तरह सुस्त नहीं हैं।” शिन्नी ने कहा ।

“तुम्हें अपनी बहन की मदद करनी चाहिए बेटी।”

“अभी तक मदद ही तो कर रहे हैं, लेकिन वह हमारी सुने तब ना। ”

“अभी वह छोटी है। जब बड़ी हो जाएगी, तो ठीक हो जाएगी।” बिट्टी ने शिन्नी को समझाया।

बिट्टी को तीनी की बड़ी चिंता सताती। शिन्नी की बात अपनी जगह ठीक थी। तीनी देखने में ठीक थी, पर अंदर से बहुत कमजोर थी। वह थोड़ी देर पंख फड़फड़ाती तो थक जाती। कई बार बिट्टी ने उसका हौसला बढाया, फिर पूछा, “बेटी क्या बात है ? तुम इतनी थकी-थकी सी क्यों रहती हो ?”

“पता नहीं मां जरा सा उड़ने में मुझे बहुत थकान लगती है।” तीनी बोली।

“तुम अपनी बहनों को देखो। वे कितनी देर तक वन में चुस्ती से घूमती रहती हैं।”

“मै कोशिश तो करती हूं मां, पर क्या करूं, मेरे पंख जबाब दे जाते हैं।” तीनी बड़ी मासूमियत से बोली।

बेटी के लिए परेशान बिट्टी डॉक्टर गुंपी गिलहरी के पास पहुंची। उसने तीनी की परेशानी उसे बताई।

“डॉक्टर साहब, मेरी बेटी तीनी को पता नहीं क्या हो गया है ? जरा सा उड़ने में थक जाती है।”

गुंपी ने तीनी को देखा । देखने में वह बीमार नहीं लग रही थी। हां, शरीर से वह कमजोर थी।

“तुम चिंता न करो बिट्टी। मैं इसकी जांच करके ही इसके बारे में कुछ बता सकूंगी।” गुंपी बोली।

गुंपी ने तीनी की जांच की। तीनी में कोई कमी न थी। उसके सभी टेस्ट सामान्य थे।

“शारीरिक रुप से तीनी में कोई कमी नही है बिट्टी।” गुंपी बोली।

“फिर इसे क्या हो गया है ? यह उड़ने में क्यों पिछड़ जाती है ?” बिट्टी ने पूछा।

बहुत देर तक गुंपी इस बारे में सोचती रही। फिर उसने पूछा, “इसके जन्म के समय कोई विशेष घटना तो नही घटी थी ?”

“मुझे तो कुछ याद नहीं हैं।” बिट्टी ने कहा।

“ सोचकर बताओ।” गुंपी बोली।

बिट्टी ने दिमाग पर बहुत जोर डाला, पर उसे कुछ याद नहीं आया। तभी उसकी नजर पेड़ पर बैठी एक बया पर पड़ी। उसे देखकर बिट्टी को एक घटना याद आ गई। वह बोली, “बस एक साधारण घटना घटी थी। आप तो जानती हैं जंगल राज में खतरा लगा ही रहता है। वन में एक पेड़ की डाल पर मेरे बच्चों के कॉकून लटक रहे थे। जब उनसे तितली निकलने लगी, तो अचानक वहां पर बया का एक जोड़ा आ गया।”

“फिर क्या हुआ ?” गुंपी ने पूछा।

“बया ने कई सारे काकून तोड़कर नन्ही तितलियां खा डालीं। जैसे ही उसने तीनी का काकून तोड़ा, तभी वहां पर एक बाज आ गया। बया अपनी जान बचाकर भागी और इस दौरान तीनी झट से कॉकून से बाहर आ गई।” बिट्टी बोली।

“ मुझे तीनी की परेशानी समझ में आ गई बिट्टी।” गुंपी खुश होकर बोली।

“क्या परेशानी है तीनी को ?” बिट्टी ने पूछा।

“तुम्हारी और बेटियां खुद कॉकून तोड़कर बाहर आई हैं, लेकिन तीनी नहीं।” गुंपी ने बताया।

रचनाकार को जानिए

डॉ. के. रानी : पूरा नाम डॉ. कुसुम रानी नैथानी। प्रधानाचार्या पद से सेवानिवृत्त। तीन दशक से लेखन कार्य में सक्रिय। वर्ष 2016 में ‘राष्ट्रपति पुरस्कार’ से सम्मानित। अब तक अनेक कहानियां सभी प्रतिष्ठित बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित। अब तक चार बाल कहानी संग्रह व एक बाल उपन्यास प्रकाशित।

“इससे क्या फर्क पड़ता है ?”

“बहुत फर्क पड़ता है बिना संघर्ष के कॉकून से बाहर आने में। ”

“मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।” बिट्टी ने कहा।

“मै तुम्हें समझाती हूं। कॉकून तोड़कर बाहर आने में नन्ही तितली को बहुत संघर्ष करना पड़ता है। तीनी ने नहीं किया जिसके कारण इसके पंख उतने मजबूत नहीं है।” गुंपी ने समझाया।

“ तो क्या तीनी जीवन भर ऐसी ही रहेगी ?” बिट्टी ने पूछा।

“जन्म के समय किया गया संघर्श जिंदगी भर मदद करता है। तीनी की किस्मत अच्छी थी कि वह बया का भोजन बनने से बच गई। तीनी बिना संघर्ष के कॉकून से बाहर आ गई। इसकी कीमत उसे जीवनभर चुकानी होगी। तुम तीनी का विशेष ख्याल रखना। ” गुंपी बोली।

“ धन्यवाद डॉक्टर साहब । अब मैं इस बात का ध्यान रखूंगी।” बिट्टी बोली।

उस दिन के बाद से बिट्टी तीनी के साथ घूमती ताकि उसे परेशानी का सामना न करना पड़े। उसकी और बहनों ने सुना तो वे भी तीनी की मदद करने लगी। ✪

हमारे अंदर के भगवान

एक थी चुनमुन, जिसे घर में सब प्यार से चुन्नू बुलाते थे। वैसे चुन्नू एक बहुत ही प्यारी सुंदर सी छोटी-सी बच्ची थी। वह बुद्धिमान भी थी, परंतु थी थोड़ी नकचढ़ी और मनमौजी।

आज उसने नानी से गार्डन जाने की जिद की। नानी ने कहा, "देखो कोरोना बहुत तेजी से फैल रहा है। इसलिए हमें मास्क पहनना भी जरूरी है और हाथों को सेनेटाइज करना भी।"

"जी नानी।" जाने की गरज से चुन्नू ने दोनों काम कर लिए।

नानी ने रास्ते में चुन्नू को समझाया कि किसी चीज को टच नहीं करना है, वरना कोरोना के कीटाणु हमारे शरीर में प्रवेश कर जाएंगे।

उछलती-कूदती चुन्नू नानी का हाथ पकड़कर दौलतबाग में पहुंची।

बगीचे की पूरी जमीन हरी-हरी दूब से भरी हुई थी और उस पर भागना चुन्नू को बेहद पसंद था।

बाग की क्यारियों में माली काका ने सुंदर रंग-बिरंगे फूलों के कई पौधे लगा रखे थे और क्यारियों में पानी डाल रखा था। फूलों पर रंग-बिरंगे सुंदर पंखों वाली सतरंगी तितलियां आ-आकर बैठ रही थीं।

थोड़ी देर तक चुनमुन अपनी नानी के साथ हरी दूब पर घूमती रही। बीच में दौड़ भी लगा लेती, परंतु उसका मन तो तितलियों पर अटका था।

नानी से नजर बचाकर चुन्नू दौड़ कर उन दो तितलियों का पीछा करने लगी, जो हर फूल पर साथ जा-जा कर बैठ रही थीं।

वह बार-बार उन दोनों को अलग करके उड़ाने की कोशिश करने लगी।

"नानी, ये दोनों साथ-साथ क्यों उड़ रही हैं?"

"बेटी यह दोनों बहनें हैं, जैसे आप आशी की बहन हैं न।"

"जी नानी! जब मामा-मामी आशी को लाते हैं तो हम दोनों बहनें भी साथ-साथ सारे काम करती हैं।" चुन्नू चहकी।

अपने लेखक को जानिए

रंजना माथुर : **:(रिटायर्ड आफिस सुपरिटेंडेंट) अभिरुचि : लेखन, गायन, पठन, कुकिंग, प्रकाशित पुस्तकें : एक एकल काव्य संग्रह 'खुशबू अहसासों की' प्रकाशित, 13 साझा काव्य संग्रह। एक एकल कहानी संग्रह, एक एकल लघुकथा संग्रह, एकल गजल संग्रह प्रकाशाधीन। सम्मान : देश की लगभग 30 से अधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं से सम्मान प्राप्त।**

"अब आप उन्हें मत छेड़ना। आपके हाथ में सेनेटाइजर लगा है। उनको नुकसान पहुंचेगा।" नानी ने समझाया।

"हां नानी।" वह बोली।

पर चुन्नू अपनी आदत से मजबूर थी। इस बार उसने फूलों की क्यारियों में घुसकर उन दोनों में से एक तितली को पकड़ लिया। फूल के पौधों को भी रौंद दिया और जूते गीली मिट्टी से भर गए। दूसरी तितली उड़ गई लेकिन यह तितली छूटने के लिए फड़फड़ा रही थी। नानी ने देखा तो चुन्नू कहने लगी, "देखिए नानी! मैंने एक बहन को पकड़ लिया।"

नानी ने नाराजगी जताते हुए कहा, "आपसे मैंने कहा था न कि दोनों बहनों को अलग न करना।"

"अब वह अकेली बहुत रोएगी। देखो! इसके पंख भी टूट गए हैं। इसे छोड़ दो। यह उड़ नहीं पाएगी। यह आगे जाकर गिर जाएगी तो चूहे, कुत्ते या कौए इसे खा जाएंगे। अब यह ठीक न हुई, तो बहन कितनी दुखी होगी। फूलों के पौधे भी आपके पैरों से कुचल गए। देखो आपके शूज में भी मिट्टी लग गई। बुरे काम की सजा मिलती है चुन्नू बेटा।" नानी ने चुन्नू को बहुतेरा समझाया।

"नानी, यह काम तो मुझे अच्छा लगता है।" वह फिर भी मचली।

"लेकिन बेटी, हमारे किसी काम से दूसरों को दुख-दर्द होता है, वह अच्छा काम नहीं होता।"

नानी की समझाने पर चुन्नू ने उत्तर दिया, "परंतु मुझे तो पता नहीं कि यह अच्छी बात और यह बुरी।"

"अरे मेरी प्यारी बेटू। आपकी मम्मा तथा घर के सभी बड़े आपको समझाते हैं कि क्या अच्छा है क्या बुरा है? बताओ?"

"जी नानी।"

"बेटू रानी! हमारे पूरे मन में भगवान रहते हैं और शैतान हमारे मन के एक कोने में जबरदस्ती घुसा रहता है।"

"हमें कोई भी काम करना हो तो मन सोचता है न कि यह करना चाहिए या नहीं करना चाहिए।"

"हां नानी!"

"जैसे अभी आपको तितली नहीं पकड़नी चाहिए। फिर भी बात न मानकर आपने तितली के पंख तोड़ दिए।" यह मन में जबरदस्ती घुसे हुए शैतान ने कहा था। शैतान की बात मानकर जो काम करते हैं वह गलत होता है पाप होता है।"

"हम अगर अपनी बुद्धि से काम लेते हैं न, तो फिर शैतान की नहीं चलती।"

"पता है चुनमुन, भगवान सबसे पावरफुल हैं। वे शैतान को और बुरा काम करने वाले को दोनों को सजा देते हैं। समझ गई मेरी प्यारी गुड़िया।"

इतना कुछ समझाने पर चुन्नू ने सिर्फ इतना कहा, "जी नानी। अब मम्मा के पास चलें। मुझे भूख लगी है।"

आज खाना खाकर चुन्नू जल्दी सो गई, क्योंकि गार्डन में वह खूब खेली थी, सो थक गई।

दूसरे दिन स्कूल में चुन्नू ने लंच टाइम में अपने टिफिन से दिविशा को इसलिए खाना खिलाया कि दिविशा की मम्मी बीमार हैं और वह रोजाना केवल ब्रेड जैम लाती है।

"चुनमुन, तुमने आज इसे अपना खाना खाने को दे दिया। रोजाना तो डांटकर भगा देती हो।" माही ने पूछा।

"नहीं माही! हमारे अंदर भगवान होते हैं और एक कोने में एक शैतान जबरदस्ती घुसना चाहता है। वही गलती करवाता है हमसे।"

"मेरे अंदर के भगवान कहते हैं कि हमको सबसे शेयर करके खाना चाहिए। उस शैतान को मैंने अपने अंदर आज नहीं घुसने दिया।"

और चुन्नू ने उस दिन से सबके साथ लंच शेयर करना शुरू कर दिया।

तब से क्लास में सबको सहयोग देने और झगड़े सुलझाने में चुनमुन माहिर हो गई है। सभी को अच्छे-बुरे का भेद समझाकर भगवान के पावर के बारे में समझाकर लड़ाई खत्म करवा देती है।

चित्र : इंदिरा

मोबाइल की लत

"चिंटू, चलो, जल्दी से दूध पी लो।" दूध का गिलास टेबल पर रखते हुए मम्मी बोलीं।

चिंटू कुछ भी जवाब न देकर अपने मोबाइल गेम में डूबा रहा। दस वर्षीय चिंटू का यह रोज का हाल था। वह हर किसी की बात को अनसुना करता रहता। पढ़ाई हो या खाना, कोई भी काम समय पर नहीं करता। उसकी सारी दुनिया मोबाइल गेम में ही सिमटकर रह गई थी। उसके मम्मी-पापा ने उसकी गेम की लत छुड़ाने की बहुत कोशिश की परंतु असफल रहे।

चिंटू के मम्मी-पापा उसके इस व्यवहार से परेशान थे। उन्हें पता था कि मोबाइल गेम के कारण चिंटू का शरीर ही नहीं उसकी बौद्धिक क्षमता भी कुप्रभावित होगी।

दिवाली और छठ पूजा की छुट्टी हुई, तो चिंटू मम्मी-पापा के साथ कार में बैठ कर गांव के लिए निकल पड़ा। जाने के दौरान भी चिंटू रास्ते भर मोबाइल गेम खेलने की जिद करता रहा। उसकी मां किसी तरह उसे मनाते हुए खिड़की से बाहर दिखाती और बातें करती रही।

सभी गांव पहुंच गए। चिंटू की मोबाइल के लिए जिद फिर शुरू हो गई, तो, मां ने चिंटू को समझाते हुए कहा, "चिंटू, पहले दादी को प्रणाम तो करो।

रात हो गई। सभी खाना खाकर निश्चिंत हो गए थे। चिंटू फिर मोबाइल की जिद करने लगा। तभी दादी ने कहा, "क्यों चिंटू, तुम तो अपनी दादी को भूल गए, चल आ, आज मेरे साथ सोना।"

"ठीक है दादी, पर बिना गेम खेले मुझे नींद नहीं आती।"

"मैं तुम्हें आज प्यारी सी कहानी सुनाऊंगी, देखना, फिर तुम्हें कितनी अच्छी नींद आती है।"

अगले दिन गांव का ही लड़का राहुल घर के बने कुछ खिलौने और क्राफ्ट लेकर चिंटू के साथ खेलने आया। बातों-बातों में उसे चिंटू के मोबाइल गेम खेलने की आदत का पता चला, तो वह बोला, "मोबाइल गेम खेलने में भला क्या मजा आएगा! मैं तो पढ़ाई के बाद खूब मस्ती करता हूं और बहुत सारी चीजे भी बनाता रहता हूं। देखो ये सब मैंने ही बनाया है। क्या तुम्हारा गेम यह सब सिखा सकता है?"

"इतना ही नहीं, मैं तो अपने घर में छोटे-मोटे काम भी कर देता हूं। इसके कारण सभी लोग मुझसे खुश रहते हैं और मुझे बहुत प्यार भी करते हैं।"

राहुल की बातें चिंटू चुपचाप सुन रहा था। उसे महसूस हुआ कि वह मम्मी-पापा को कितना परेशान करता है। उसने मन ही मन सोच लिया कि अब मोबाइल गेम नहीं खेलेगा और वह भी रचनात्मक कार्य करके सभी की प्रशंसा और प्यार प्राप्त करेगा।

देखते-देखते छुट्टी के दिन बीत गए और चिंटू के मम्मी-पापा वापस जाने की तैयारी करने लगे। चिंटू की मम्मी को चिंता हो रही थी कि घर लौटते ही चिंटू फिर से गेम खेलना शुरू कर देगा। मम्मी का मुरझाया चेहरा देख चिंटू बोल पड़ा, "मम्मी, मैं समझ गया हूं कि इतना मोबाइल गेम नहीं खेलना चाहिए। अब से मैं आपको परेशान भी नहीं करूंगा। पढ़ाई के साथ खेल और रचनात्मक कार्यों पर भी ध्यान दूंगा।"

चिंटू में आए इस परिवर्तन से उसकी मां को ख़ुशी और आश्चर्य दोनों हो रहा था। ✪

अपने लेखक को जानिए

रेखा भारती मिश्रा : शिक्षा : स्नातकोत्तर (मनोविज्ञान), प्रकाशित पुस्तकें : इंद्रधनुष (काव्य संग्रह), जग में नाम कमाएंगे (बाल कविता संग्रह, नटखट नंद गोपाल (काव्य खंड)। विभिन्न राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। दूरदर्शन के साहित्यिक कार्यक्रमों में मंचीय प्रस्तुति। सम्मान : बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा हिन्दी सेवी सम्मान

मच्छर जी

हर रोज खाते कान मच्छर जी।
करे हमें परेशान मच्छर जी।

बिना बुलाए घर में घुस जाते,
ऐसे हैं मेहमान मच्छर जी।

खून चूसते हैं बेरहमी से,
छेड़े बेसुरी तान मच्छर जी।

डेंगू, मलेरिया ये फैलाते,
बीमारियों की खान मच्छर जी।

ऑल आउट से भी नहीं भागे,
हैं ये बहुत शैतान मच्छर जी।

मम्मी जब विद्युत बैट घुमाए,
होते तभी बेजान मच्छर जी।

अपने लेखक को जानिए

उदय मेघवाल 'उदय' : जोधपुर से टेक्सटाईल में डिप्लोमा। साहित्य के प्रति स्वाभाविक रुचि है। अब तक कुछ रचनाएं प्रकाशित। गीत, गजल, बाल कविताओं में विशेष रुचि।

वीर का संकल्प

वीर एक बहुत ही सलोना विद्यार्थी था। सबका मददगार और बहुत ही हंसमुख भी, मगर लापरवाही बहुत करता था। पिछले दिनों से वह अपने हस्तलेख पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहा था ।

आज वह स्कूल से आया, तो मां को खूब खुश होकर बताता रहा कि उसने खेल प्रतियोगिता मे कबड्डी मे एक मेडल जीता है। मां ने हंसकर प्रतिक्रिया दी।

उसने उत्साहित होकर अपना स्कूल बैग खोला और मेडल पहन कर मां के सामने आ गया । मां बहुत ही खुश हुईं और उसे प्यार से गले लगा लिया । मां को बहुत प्रसन्नता हो रही थी कि वीर खेल मे भी बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।

जब वीर खाना खाकर जरा आराम कर रहा था, तो मां ने वीर का बैग कुर्सी पर से उठाकर सही जगह पर रखना चाहा। शायद बैग खुला हुआ

चित्र : सुशील दोषी

था इसीलिए बैग से एक कापी नीचे गिर गई ।

मां ने कापी फिर खोली और वीर का खराब हस्तलेख देखकर उनको सदमा सा लगा। वह कापी वापस बैग मे रखकर फिर से बहुत उदास हो गई थी।

अब वह पांचवीं कक्षा में आ गया था और शिक्षक ने मां को आगाह किया कि इस बार वीर अपनी हैंडराइटिंग हद से ज्यादा खराब कर चुका है। मां तो हमेशा सतर्क रहती थी फिर भी वीर इतना लापरवाह कैसे हो सकता है ?

मां मन ही मन सोच रही थी कि पहले कितने मोती जैसे सुंदर अक्षर बनाता था और अब ऐसा लगता है कि कापी में चींटी, मक्खी, मच्छर सब भागमभाग कर रहे हैं।

मां ने एक बार फिर बेचैनी से वीर का बैग चुपचाप खोला और सारे विषयों की एक -एक कापी खोलकर पढ़ी। उनका तनाव बढ़ रहा था पर कि जल्द ही कुछ ना कुछ करना चाहिए।

वह खुद से बात करते हुए कुछ सोचने लगी और सोचते सोचते एक तरीका उनको सूझ गया।

उसी दिन उन्होंने वीर से एक मदद मांगी, वीर झट से मदद को तैयार हो गया। उन्होंने कहा कि उनके दफ्तर में किसी को फलदार पेड़ों पर कुछ जानकारी चाहिए अगर दस बारह दिन में कहीं से कुछ लिखित सामग्री मिल जाए, तो बहुत अच्छा होगा। इंटरनेट पर जानकारी है मगर उनको कुछ बोलती हुई भाषा में चाहिए। मैंने उनसे कह दिया कि मेरा बेटा कर देगा।

"मुझे लगा कि तुम कर दोगे। तुम्हारा ज्यादा समय नहीं लगेगा, रोज बीस पच्चीस मिनट बस।" मां ने अपनी बात पूरी की।

ऐसा कहकर मां वीर का चेहरा ताकने लगी। वीर को प्रकृति से बहुत प्रेम था वह कालोनी के उपवन में आम, अमरूद, अंजीर, इमली आदि के बारे में माली काका से खूब पूछता रहता था।

वीर ने चट हामी भर दी और यह कहा कि, "मां बहुत बेहतरीन काम है। मेरी पसंद का है, मैं अवश्य ही करूंगा।"

वीर ने दस दिन में यह सब लिखकर देने का वादा किया। मां बहुत सुकून की सांस ले रही थी दरअसल मां का पहला कदम कामयाब रहा।

अब वीर ने कापी लेकर लिखना शुरू कर दिया था। मां ने पढ़ा क्योंकि मां का काम था, इसलिए वीर ने बहुत ही सफाई तथा सतर्कता से किया था और इतनी सावधानी से एक-एक अक्षर सुंदर बनाया गया था कि क्या कहने ?

समय पर वीर ने मां को कापी सौंपते हुए झूम झूम कर कहा, "माली काका मेरा इतना सुंदर लेख देखकर बहुत खुश हुए मां।"

मां उसकी यह बात सुनकर खुशी से सराबोर हो गई ,जब वीर ने आगे बढ़कर एक कापी और मांगी उसने बताया कि अब वह हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक-एक पृष्ठ की कविता लिखेगा। अपनी सफलता रपर मां मन ही मन ख़ुशी से झूम उठी।

अपने लेखक को जानिए

पूनम पाण्डेः शिक्षा : पी एच डी, एन सी सी में सी सर्टिफिकेट, अंडर ऑफिसर रैंक। लखनऊ दूरदर्शन, आकाशवाणी रामपुर और आकाशवाणी अल्मोड़ा से गीतों का प्रसारण। लघुकथा, कविता, बाल कथा, आदि विधा में अब तक चार पुस्तकें प्रकाशित, राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से एक बाल कथा संग्रह का प्रकाशन। दो दशक से साहित्य आयोजन में मंच संचालन।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं, आर्थिक योगदान देकर भी इस प्रयास में सहयोगी बनें

बहुत समझदार और न्यूक्लियर फैमिली का समर्थक है

उल्लू

संसार में उल्लू को बहुत समझदार पक्षियों में गिना जाता है। भारत सहित अधिकांश देशों में प्राचीन काल से देवताओं के साथ उल्लुओं का उल्लेख है। यूनानी कहानियों में तो माना जाता है कि बुद्धि की देवी एथेन उल्लू का रूप धारण कर के ही धरती पर आई थीं।

धरती पर 6 करोड़ साल पुराने के उल्लू के जीवाश्म पाए गए है। फ्रांस में तीस हजार साल पुरानी एक पेंटिंग मिली है, जिसमें उल्लू है।

पर भारत में अजीब बात है। देवी लक्ष्मी का वाहन माने जाने के बाद भी लोग उल्लू को मूर्खता से जोड़ते हैं। किसी से कोई गलती होती है, तो तत्काल उसे उल्लू कह देते हैं।

उल्लू दुनिया के कुछ उन अनोखे पक्षियों में से एक है जो निशाचर हैं, अर्थात दिन की अपेक्षा रात को घूमना और शिकार करना पसंद करता है। इसके कान बहुत ही संवेदनशील होते हैं और यह बहुत धीमी से धीमी आवाज को भी सुन लेता है। अपनी तेज सुनने की शक्ति के दम पर ही है यह आसानी से शिकार करता है। उल्लू की चोंच बहुत छोटी और हुक की तरह होती है जिससे यह अपने शिकार को तुरंत फाड़ देते हैं।

खाने के मामले में यह मांसाहारी हैं और आमतौर पर चूहे, छछूंदर, सांप और कीट इत्यादि बड़े आराम से खा लेते हैं।

पूरे संसार में उल्लुओं की 200 से ज्यादा प्रजातियां हैं परंतु भारत में इनकी दो ही प्रजाति ज्यादा प्रसिद्ध हैं। इनमें मुआ प्रजाति के उल्लू आमतौर पर पानी के करीब रहते हैं, जबकि घुग्घु का वास खंडहर और पेड़ है।

उल्लू में खास बात यह होती है कि मादा उल्लू का आकार नर उल्लू से बड़ा होता है। इनकी आपस में

बहुत अच्छी बॉन्डिंग होती है। जब मादा उल्लू मां बनने वाली होती है, तो शिकार करने का काम नर उल्लू करते हैं। शिकार करने के बाद पहले वह मादा को खिलाता है, उसके बाद ही खुद खाता है।

उल्लू की खास बात यह है कि यह अपनी गर्दन व सिर को 270 डिग्री तक घुमा सकता है। उल्लू कई आकार के होते है। सबसे छोटा उल्लू 30 ग्राम तक का होता है। इसे ऐल्प कहा जाता है। बड़े साइज के उल्लू को ईगल कहा जाता है। इनका वजन 4 किलो के आसपास होता है। उल्लू की सभी प्रजातियों के उल्लू भिन्न-भिन्न आवाज निकालते हैं जिनसे इनकी पहचान होती है।

वैसे उल्लू शांत स्वभाव के होते हैं और शिकार के लिए अंधेरे में निकलते हैं। यह चुपचाप बैठकर आवाज को भांपने का प्रयास करते हैं और आवाज के आधार पर ही अपना शिकार करते हैं।

मादा उल्लू आमतौर पर एक बार में चार से पांच या अधिकतम एक बार में 12 तक अंडे देती है।

हमारी संसद को अंग्रेजी में पार्लियामेंट कहते हैं। शायद यह शब्द उल्लुओं के समूह से आया है क्योंकि उल्लुओं के समूह को पार्लियामेंट कहा जाता है।

उल्लू के बारे में खास

- अंटार्कटिक क्षेत्र को छोड़कर उल्लू सारे संसार में पाए जाते हैं।
- उल्लू बुद्धिमान पक्षी होता है, ये इंसान के मुकाबले 10 गुना धीमी आवाज सुन सकता है।
- उल्लू के कान आकार में एक जैसे नहीं होते हैं।
- दुनिया का सबसे छोटा उल्लू 5-6 इंच और सबसे बड़ा 32 इंच तक का होता है।
- पलकें नहीं होने के कारण इनकी आंखें हरदम खुली रहती हैं।
- उल्लू उड़ते वक्त ज्यादा आवाज नहीं करते।
- उल्लू को न्यूक्लियर फैमिली पसंद है। यह झुंड में नहीं, अकेले रहना पसंद करते हैं।
- धरती के सबसे बड़े उल्लू के पंख 5 फीट तक लंबे होते हैं ।
- उल्लू दिन में नहीं, बल्कि रात में जागता है।
- उल्लू की आंखें उसके दिमाग जितनी बड़ी होती है, जो कभी हिलती नहीं है बल्कि एक जगह फिक्स रहती है।
- उल्लू, लगभग 30 साल की उम्र तक जीते हैं। ये अपने खाने को चबाते नहीं, बल्कि सीधे ही निगल जाते है।
- भारत में उल्लू का शिकार करना भी गैरकानूनी है।
- उल्लू उड़ते समय बिल्कुल भी आवाज नही करता, क्योंकि इनके पंख का ऊपरी हिस्सा मुलायम होता है जो आवाज को अपने अंदर सोखता है।
- उल्लू का बहुत शिकार होता है। अंधविशवास है कि उल्लू का काला जादू में सफल इस्तेमाल होता है। इसके शरीर के कई अंग दवा बनाने में भी काम आते हैं।
- आजकल तो मलेशिया जैसे कई देशों मे उल्लू का मांस खाने की आदत भी पड़ी है.
- उल्लू को दिन में धुंधला और रात में साफ दिखाई देता है।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

आकांक्षा शर्मा

नाम : आकांक्षा शर्मा
उम्र : 14 वर्ष
कक्षा : 10
स्कूल :सैंट फ्रांसिस स्कूल शामली

प्रथम पुरस्कार

नाम : प्रत्यक्ष
उम्र : 11
कक्षा : 7, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

प्रत्यक्ष

नाम : आरना गौरव
उम्र : 9
कक्षा : 5, सेंट जेवियर्स सीनियर सेकंडरी स्कूल, बलरामपुर (उ.प्र.)

आरना गौरव

नाम : चार्वी तातेड़ जैन
उम्र : 5
कक्षा : 1 , स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

चार्वी तातेड़ जैन

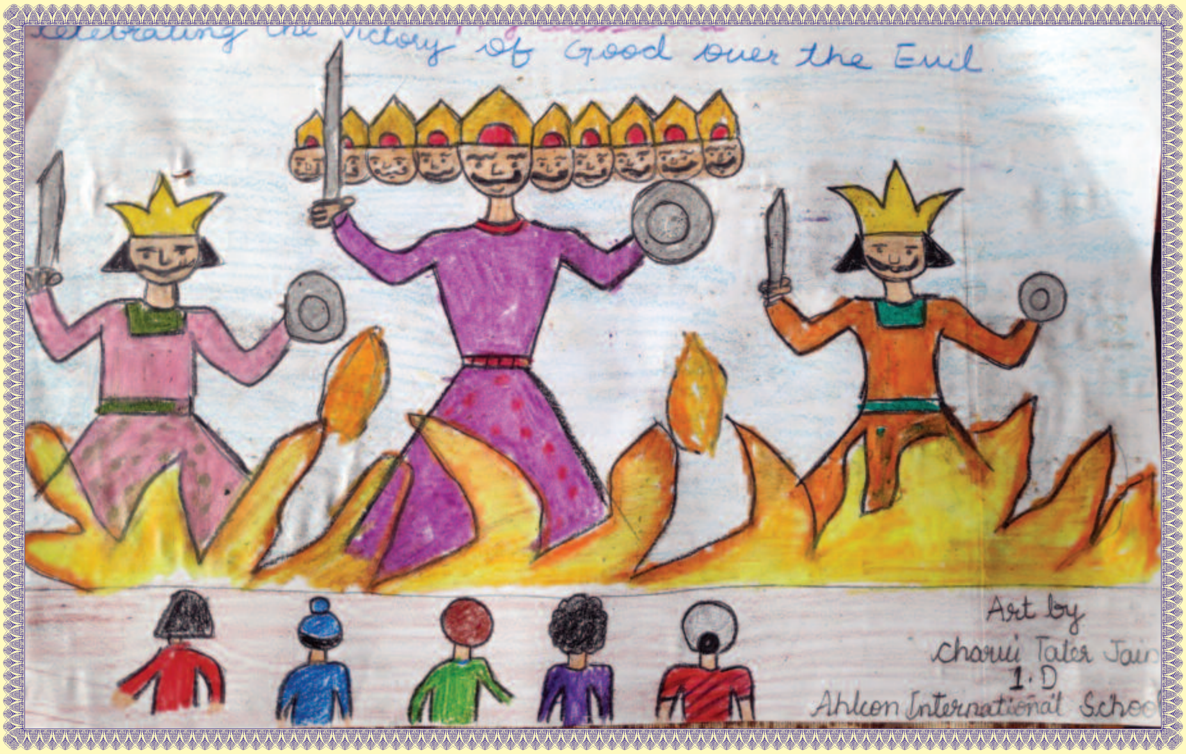

नाम : ह्धान क्वात्रा
आयु : 9 वर्ष
कक्षा : 4, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

ह्धान क्वात्रा

द्वितीय पुरस्कार

मानवी शर्मा

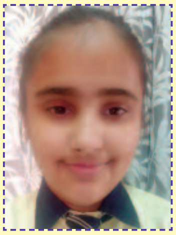

मानवी शर्मा
आयु : 13 वर्ष,
कक्षा : 9, स्कूल : एम पी एस इंटरनेशनल स्कूल जयपुर

नाम : प्रिशा चौखड़ा
उम्र : 13 साल
कक्षा : 7, स्कूल : पोद्दार इंटरनेशनल, ठाणे, महाराष्ट्र

प्रिशा चौखड़ा

बाल दिवस

गुलाब का फूल, टोपी पहने
शान से वो आते थे,
काम के बाद सबसे पहले,
बच्चों से प्यार दिखाते थे !

14 नवंबर चाचा का जन्मदिन,
बाल दिवस के रूप में मनाते हैं
खेल-कूद और खाने के साथ
कई उपहार भी लाते है!

बच्चो के संदर भविष्य का,
देखा नेहरू जी ने सपना
आओ करे साकार इसे,
बनाकर ये लक्ष्य अपना।

गरीब बच्चों को खाना देकर,
और एक छत बनाते है
हर बच्चे को पढ़ाकर,
चलो आगे बढ़ाते है !

-श्रेयानवी सिंह

नाम : श्रेयान्वी सिंह
उम्र : 7
कक्षा : 2, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

श्रेयान्वी सिंह

पानी की समस्या

हमारे देश में नदियां हैं, हिमालय, समुद्र है और पानी की कमी नहीं है लेकिन हमारे उपयोग के लिए हमारे पास केवल 2.5 प्रतिशत पानी है जिसका हम उपयोग कर रहे हैं अपना जीवन यापन करने के लिए।

अगर हम बात करें जनसंख्या की तो दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है और पानी का अंधाधुंध उपयोग हो रहा है। इसलिए देश में पानी की कमी कहीं ना कहीं, किसी ना किसी राज्य में देखने को मिलती है। उसका कारण है कि पानी हमारे पास केवल 2.5 प्रतिशत है और लोग ज्यादा है।

लेकिन जो हमारे पास अच्छा पानी है उस पानी को ना हम बचा रहे हैं और ना ही इस्तेमाल हुए पानी को दुबारा से उपयोग कर रहे है। दिन का दिन जनसंख्या बढ़ रही है, लेकिन पानी तो उतना ही है इसलिए पानी हमेशा खर्च होता रहता है और लोग खर्च करते हैं जिसकी वजह से पानी की कमी आ रही है।

जहां पानी कि कमी देखने को मिलती है या जिन राज्यों मे पानी जल्दी प्राप्त नहीं होता, वहां लोग पानी का उपयोग करके दुबारा से उसी पानी को उपयोग करते है, जैसे राजस्थान। राजस्थान में अभी भी बहुत सारे लोग हैं जो पानी को बचाते हैं। ग्राउंड वाटर टैंक मे जमा रखते है। जब उनको इस्तेमाल करना होता है, तब उस पानी को इस्तेमाल करते हैं। जो भी खराब पानी होता है घरों का, लोग किसी एक जगह कुआं जैसा खुदवाकर उसे वहां पर जमा करते हैं ताकि उस पानी को फिल्टर कर करके या अच्छा पानी करके उसे फिर से उपयोग कर सकें।

हम यदि कूड़ा पानी में न डालें, तो नदियों में पानी स्वच्छ रहेगा और पानी का बचाव ज्यादा से ज्यादा होगा क्योंकि अगर हम कूड़ा या प्लास्टिक नहीं फेंकते हैं, तो पानी साफ रहता है और उस पानी को एक जगह रख कर या डैम का निर्माण करके वहां मछलियां छोड़ दें तो भी वहां के लोगो को फायदा होगा और डैम का पानी बढ़ेगा एंव साफ रहेगा।

कई बार आप लोगों ने देखा होगा कि अखबार में लिखा आ जाता है कि नदियों के पानी में लोग तैर कर नहीं टहलकर पार करते हैं, नदियों के आसपास के हैंडपंप भी सूख रहे हैं, इतना देखने के बावजूद हम पानी नहीं बचाते क्योंकि लोगो को अभी पानी बराबर मात्रा मे मिल रहा है। लेकिन आने वाले दिनों मे कैसे हम रहेंगे ?

यहां तक कि हमारे वैज्ञानिको का मानना है कि 2025 तक जो भी हमारे पास साफ पानी बचा है, इस धरती पर वह खत्म हो सकता है क्योंकि हर दिन देश की जनसंख्या बढ़ती ही जा रही है। इसलिए पानी ज्यादा से ज्यादा बचाएं, चाहे वो कोई भी पानी हो क्योंकि जल है तो कल है और यदि जल रहेगा तो हम भी रहेंगे।

नाम : राज श्रीवास्तव
आयु : 15 वर्ष
कक्षा : 10, राजकीय उच्चतर मध्यमिक बाल विद्यालय , संगम विहार, नई दिल्ली

नाम : अवनि जैन
उम्र : 6
कक्षा : 1, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

तृतीय पुरस्कार

नाम : शिवांश मनुजा
उम्र : 8, कक्षा : 3
स्कूल : स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

बैडमिंटन

बैडमिंटन से मिलते-जुलते खेल की उत्पत्ति आज से करीब 2000 वर्ष पूर्व यूनान में हुई। वहां से ब्रिटिश सेना के साथ यह खेल भारत आया और फिर चीन और थाईलैंड होते हुए पूरे एशिया पर छा गया।

ब्रिटेन में भी बच्चे एक ऐसा खेल खेलते थे, जिसमें एक शटल-कॉक को वे किसी चीज से मारते रहते थे और जमीन पर नहीं गिरने देते थे। यह खेल इतना लोकप्रिय हुआ कि 1854 में एक पत्रिका में भी इसके विषय में छापा गया।

1860 में पुणे में तैनात ब्रिटिश सेना के ऑफिसर इस शटल-कॉक वाले खेल को खेलने लगे। इसे मजेदार और कुछ मुश्किल बनाते हुए उन्होंने दोनों खिलाड़ियों के बीच में नेट लगाना आरंभ कर दिया। खेल लोकप्रिय हुआ, तो यह खेल पूना नाम से जाना जाने लगा।

इन्हीं दिनों इंग्लैंड में ड्यूक ऑफ ब्यूफोर्ट ने अपने बड़े-से घर में सैनिकों के मनोरंजन के लिए पूना खेल खिलाने की व्यवस्था की। उनके इस घर का नाम था बैडमिंटन हाउस। धीरे-धीरे लोग इस खेल को यहां खेले जाने के कारण बैडमिंटन कहने लगे और समय के

साथ पूना नाम खत्म हो गया और पूरी दुनिया में इसे बैडमिंटन कहा जाने लगा।

1877 में पहली बार बैडमिंटन क्लब अस्तित्व में आया, जिसका नाम था 'बाथ बैडमिंटन क्लब'। इसने ही पहली बार बैडमिंटन खेल के नियम बनाए।

पर 1893 में बैडमिंटन एसोसिएसन ऑफ इंग्लैंड ने पहली बार विस्तृत तरीके से बैडमिंटन के नियम बनाकर उन्हें प्रकाशित किया। आज भी उनमें से कई नियम चल रहे हैं।

इसी एसोसिएसन को दुनिया में प्रथम बैडमिंटन प्रतियोगिता कराने का श्रेय प्राप्त है। 1899 में पहली बार इंग्लैंड में 'ऑल इंग्लैंड ओपन बैडमिंटन चैंपियनशिप' का आयोजन किया गया। आज भी यह प्रतियोगिता होती है।

द इंटरनेशनल बैडमिंटन फेडरेशन (आई.बी.एफ.) का गठन 1934 में किया गया। कनाडा, डेनमार्क, इंग्लैंड, फ्रांस, नीदरलैंड, आयरलैंड, न्यूजीलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स इसके संस्थापक सदस्य थे। भारत 1936 में इस फेडरेशन में शामिल हुआ। अब इस संस्था का नाम बदलकर बी.डब्ल्यू.एफ. (बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन) कर दिया गया है। ✪

रॉकेट
कथा एवं चित्रांकन : पंकज राय
हाय, सबके मना करने पर भी मैंने इतने पटाखे क्यों खरीद लिए
अरे, विकी, दीपावली पर खुश होने के बदले तुम रो रहे हो
क्या करूं। मेरी बेवकूफी से पटाखों पर मैंने सारे पैसे खर्च कर दिए।
अब पेट्रोल भरवाने को भी पैसे नहीं हैं मेरे पास। अब घर कैसे जाऊं ?
चलो, इन पटाखों का यहीं इस्तेमाल करते हैं, तुम्हें घर पहुंचाने के लिए।
यह बढ़िया होगा। फिर रात को ग्रीन दिवाली मनाएंगे
मीनू की युक्ति काम आई। विकी की कार स्पेशशिप की तरह रॉकेट की मदद से चल पड़ी।
इसे कहते हैं साइंस। हैप्पी दीपावली टू ऑल

तीन सवाल : एक जवाब

1. इस बल्लेबाज का नाम बताओ-

1. वनडे इंटरनेशनल क्रिकेट में दो दोहरे शतक लगाने वाले एकमात्र बल्लेबाज।

2. वनडे इंटरनेशनल में एक इनिंग्स में सबसे ज्यादा रन बनाने के रेकॉर्ड इनके नाम है।

3. 5 बार आईपीएल टूर्नामेंट जीतने वाले एकमात्र खिलाड़ी

2. इस गेंदबाज का नाम बताओ-

1. इन्हें टर्बनेटर भी कहते हैं।

2. 400 विकेट लेने वाले भारत के तीसरे गेंदबाज।

3. इस साल कोलकाता नाइटराइडर के लिए आईपीएल में थे, पर एक मैच भी नहीं खेले।

3. इस खिलाड़ी का नाम बताओ

1. अपने पहले ही विश्व कप क्रिकेट मैच में इन्होंने शतक लगाया।

2. ऑस्ट्रेलिया में एक टेस्ट सीरीज में 4 शतक लगाने वाले एकमात्र भारतीय खिलाड़ी।

3. अंडर 19 क्रिकेट विश्वकप जीतने वाली टीम के कप्तान थे।

4. इस क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ-

1. टेस्ट मैचों में सबसे ज्यादा शतक इन्होंने लगाया है।

2. अपने छठे विश्वकप में भाग लेते हुए विश्वकप जीता।

3. एकमात्र खिलाड़ी जिन्हें भारत रत्न दिया गया।

5. इस क्रिकेट खिलाड़ी को पहचानो-

1. इन्होंने 20-20 विश्वकप के एक मैच में 6 गेंदों पर 6 छक्के लगाए थे।

2. 2011 के वनडे विश्वकप में यह 'प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' थे।

3. इनके पिता भी भारत के लिए टेस्ट मैच खेल चुके हैं।

6. इस क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ

1. टेस्ट क्रिकेट में इन्होंने दो तिहरे शतक लगाए हैं।

2. दिल्ली के लिए रणजी ट्राफी खेलते थे।

3. इन्हें मुल्तान का सुल्तान भी कहते हैं।

7. इस क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ

1. टेस्ट में एक इनिंग्स में दस विकेट लिए।

2. भारत के लिए सबसे ज्यादा टेस्ट विकेट लिए।

3. भारतीय क्रिकेट टीम के कोच भी बने।

8. इस क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ-

1. इस खिलाड़ी ने टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक लगाया है।

2. इस खिलाड़ी ने टेस्ट मैचों में चौहरा शतक लगाया है।

3. प्रथम श्रेणी क्रिकेट में इनका सर्वोच्च स्कोर 501 नाट आउट है।

9. अपने समय के इस महान ओपनिंग बैट्समैन का नाम बताओ-

1. इस खिलाड़ी ने टेस्ट क्रिकेट में एक ही टेस्ट की दोनों पारियों में शतक जमाने के कारनामा तीन बार किया है।

2. टेस्ट क्रिकेट में 10000 रन बनाने वाले पहले बल्लेबाज हैं।

3. अपने पहले ही टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा 774 रन बनाने का रिकॉर्ड आज भी इनके नाम पर है।

10. भारत के इस महान क्रिकेटर का नाम बताओ-

1. इन्होंने भारत की तरफ से पहला टेस्ट शतक लगाया था।

2. ब्रेडमैन की ऑस्ट्रेलियन टीम के सामने यह भारतीय टीम के कप्तान थे।

3. इनके दो बेटे भी भारत के लिए टेस्ट मैच खेल चुके हैं।

11. इस महान क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ-

1. इन्होंने 200 टेस्ट मैच खेले हैं।

2. वन डे इंटरनेशनल में पहली बार दोहरा शतक इन्होंने ही लगाया।

2. इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 100 शतक लगाए हैं।

12. जरा इस भारतीय खिलाड़ी का नाम बताना-

1. यह भारत के पहले तेज गेंदबाज थे, जिन्होंने 200 विकेट लिए।

2. यह दुनिया के पहले खिलाड़ी हैं जिन्होंने टेस्ट में 5000 रन बनाए और 400 विकेट भी लिए।

3. इन्होंने भारत के विश्वकप जीतने वाली वन डे टीम की कप्तानी की थी।

उत्तर :

1. रोहित शर्मा, 2. हरभजन सिंह, 3. विराट कोहली, 4. सचिन तेंदुलकर, 5. युवराज सिंह, 6. वीरेंद्र सहवाग, 7. अनिल कुंबले, 8. ब्रायन लारा, 9. सुनील गावस्कर, 10. लाला अमरनाथ, 11. सचिन तेंदुलकर, 12. कपिल देव

पर उपदेश कुशल बहुतेरे

मैं रोज पार्क में खेलने जाता, तो एक अंकल से मुलाकात होती। उनकी खास बात यह थी कि वह हरेक में कुछ न कुछ कमियां निकालते। खासकर बच्चों से कहते, "तुम लोग किसी की बात कभी मानते ही नहीं हो। अच्छी बात सीखने में शर्म नहीं करनी चाहिए। हमें देखो, हमने कभी अच्छी बात सीखने में शर्म नहीं की।"

अंकल की बातें अच्छी होती थीं, पर हमें बुरी इसलिए लगती थी कि हम बच्चे कोई बदतमीजी करते ही नहीं थे, पर वह हमें हमेशा गलत ठहराते थे।

एक शाम मैं पड़ोस की दुकान से घर का कुछ सामान खरीदने गया। देखा, वहां वही अंकल दुकानदार से बहस कर रहे थे। उन्होंने कुछ सामान खरीदा था और उसे रखने के लिए पॉलीथिन की थैली मांग रहे थे। दुकानदार कह रहा था, "सरकार ने पॉलीथिन की थैली पर रोक लगा दी है, आपको अपने साथ थैला लाना चाहिए था।"

अंकल गुस्से से बोले, "सब दिखावा है। एक मेरे पॉलीथिन इस्तेमाल न करने से क्या दुनिया बदल जाएगी?"

तभी दुकानदार ने मेरे हाथ में थैला देख लिया। उसने अंकल से कहा, "देखिए इस बच्चे को, यह भी तो थैला लेकर आया है। जब एक बच्चा पर्यावरण के लिए सोच सकता है, तो आप और हम बड़े क्यों नहीं।"

अंकल ने मुझे देखकर आंखें नीचीं कर लीं। वह मुझसे आंख मिलाने से कतराने लगे। तब मुझे स्कूल में हिंदी पढ़ते समय पढ़ाया गया मुहावरा याद आ रहा था, "पर उपदेश कुशल बहुतेरे।"

उस दिन के बाद उन्होंने कमियां निकालनी बंद कर दी।

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**